राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, रविवार, 08 फरवरी 2026

वर्ष 14,अंक 289, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

खाकी को दागदार कर रहे सालों से हल्के में तैनात आरक्षी...खूबसूरती में कोतवाली..03

बालू माफिया अमरेंद्र तिवारी व उनके सहयोगी ने किया मुकेश कुशवाहा के ऊपर जानलेवा हमला..04

घुसखोर पंडतः आखिर योगी आदित्यनाथ को क्यों देना पड़ा FIR दर्ज करने का आदेश?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश में हुई एक बैठक ने पूरे देश की राजनीति में हलचल पैदा कर दी. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की टेंशन भी बढ़ गई. सवाल देश के सबसे बड़े राज्य में जातीय समीकरण (जिस सोशल इंजीनियरिंग का नाम भी दिया जाता है) से जुड़ा था. यूपी में पिछले दो बार से बीजेपी का यह समीकरण पूरी तरह से सटीक बैठ रहा है. बस साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को हल्का सा झटका जरूर लगा था. दरअसल, कुशीनगर के विधायक पीएन पाठक के आवास पर प्रदेश के तकरीबन 52 ब्राह्मण एमएलए जुटे थे. दिलचस्प बात यह है कि इसमें भाजपा के साथ ही अन्य दलों के विधायक भी शामिल थे. राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि सीएम योगी आदित्यनाथ से ब्राह्मण समुदाय नाराज चल रहा है. इसी वजह से 'ब्राह्मण ओनली' विधायकों की बैठक बुलाई गई थी. इससे योगी सरकार चौकन्ना हो गई. यहां एक और बात बेहद अहम है कि अगले साल यानी 2027 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और यूपी की राजनीति में ब्राह्मण समुदाय का प्रभावी दखल है. इन तमाम राजनीतिक हलचल के बाद UGC का नियम और अब 'घुसखोर पंडत' वेब सीरीज का मामला सामने आ गया. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संवेदनशीलता को देखते हुए घुसखोर पंडत विवाद में तत्काल एफआईआर दर्ज करने का आदेश दे दिया, ताकि समुदाय के गुस्से को शांत किया जा सके और ब्राह्मणों की नाराजगी को भी दूर किया जा सके. उत्तर प्रदेश में नए साल 2026 के आगाज से पहले सियासी पारा सातवें आसमान पर है. इसी गहमागहमी के बीच 23 दिसंबर की शाम लखनऊ में एक ऐसी बैठक हुई जिसने सत्ता के गलियारों में हलचल मचा दी. कुशीनगर के विधायक पीएन पाठक के आवास पर करीब 52 ब्राह्मण विधायकों और एमएलसी डिनर के लिए एकजुट हुए थे. हैरानी की बात ये भी रही कि इसमें बीजेपी के अलावा दूसरी पार्टी के भी ब्राह्मण नेता शामिल रहे. अब एक वेब सीरीज के ट्रेलर ने ऐसा भूचाल खड़ा किया कि खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को हस्तक्षेप कर एफआईआर दर्ज कराने और ट्रेलर हटवाने का आदेश देना पड़ा. मामला है आगामी नेटफ्लिक्स रिलीज 'घुसखोर पंडत' का, जिसके शीर्षक को लेकर ब्राह्मण समाज ने तीखा विरोध दर्ज कराया. इस विवाद ने सिर्फ मनोरंजन जगत नहीं, बल्कि यूपी की जातीय राजनीति और आगामी चुनावी गणित को भी केंद्र में ला खड़ा किया है।

इतनी जल्दी कार्रवाई के क्या मायने?

योगी सरकार ने लखनऊ के हजरतगंज थाने में फिल्म के निर्देशक नीरज पांडे और उनकी टीम के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई. आरोप है कि फिल्म का शीर्षक जाति विशेष को अपमानित करता है, सामाजिक सौहार्द्र बिगाड़ने की कोशिश करता है और इससे कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है. सरकार ने संभावित विरोध-प्रदर्शनों और बढ़ते आक्रोश का हवाला देते हुए नेटफ्लिक्स से ट्रेलर हटाने को कहा, जिसपर प्लेटफॉर्म ने तुरंत कार्रवाई की. अभिनेता मनोज बाजपेयी और निर्देशक नीरज पांडे दोनों ने बयान जारी कर कहा कि उनका उद्देश्य किसी समुदाय को ठेस पहुंचाना नहीं था और उन्होंने जनभावनाओं का सम्मान करते हुए प्रचार सामग्री वापस ले ली है. लेकिन सवाल यह है कि आखिर एक फिल्म के शीर्षक पर इतनी तेज सरकारी कार्रवाई क्यों? इसका जवाब यूपी की मौजूदा सियासी जमीन में छिपा है, जहां ब्राह्मण वोट बैंक एक बार फिर निर्णायक भूमिका में उभरता दिख रहा है. प्रदेश में तकरीबन 12 से 14 फीसद तक ब्राह्मण मतदाता हैं, लेकिन प्रभाव 100 से ज्यादा सीटों पर माना जाता है. पूर्वी यूपी से लेकर मध्य, बुंदेलखंड और पश्चिमी क्षेत्रों तक ऐसे कई इलाके हैं, जहां ब्राह्मण मतदाता संख्या में कम होने के बावजूद चुनावी समीकरण बिगाड़ने या संवारने की क्षमता रखते हैं।

यूपी के ब्राह्मण भाजपा सरकार से नाराज क्यों?

23 दिसंबर 2025 को लखनऊ में कुशीनगर के विधायक पीएन पाठक के आवास पर हुई बंद कमरे की बैठक ने राजनीतिक हलकों में हलचल बढ़ा दी है. औपचारिक तौर पर इसे सामाजिक मेलजोल बताया गया, लेकिन अंदरखाने इसे सत्ता और संगठन में ब्राह्मण नेताओं की कथित अनदेखी को लेकर शक्ति प्रदर्शन के तौर पर देखा गया. इससे पहले मॉनसून सत्र के दौरान क्षत्रिय विधायकों की 'कुटुंब बैठक' ने भी सियासी संदेश दिया था. अब ब्राह्मण नेताओं की इस जुटान को उसी कड़ी में देखा जा रहा है. राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि ऐसे समय में जातिगत पहचान और प्रतिनिधित्व का मुद्दा स्वतः ही सियासी अर्थ ग्रहण कर लेता है खासकर तब, जब चुनाव की आहट तेज हो रही हो।

ब्राह्मण समाज की राजनीतिक ताकत

ब्राह्मण समाज की राजनीतिक ताकत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यूपी के अब तक के 21 मुख्यमंत्रियों में 6 ब्राह्मण रहे हैं, जिनमें नारायण दत्त तिवारी तीन बार मुख्यमंत्री बने. मंडल आयोग के बाद भले ही दलित-ओबीसी राजनीति ने सत्ता संरचना बदल दी हो, लेकिन बतौर मतदाता ब्राह्मण वर्ग ने धीरे-धीरे अपना प्रभाव फिर से मजबूत किया है. माना जाता है कि प्रदेश में अभी भी तकरीबन 14 फीसद ब्राह्मण वोटर्स हैं, जबकि इस जाति का राज्य की 100 से 115 सीटों पर प्रभाव है. मतलब इन सीटों पर ब्राह्मण खेल बना और बिगाड़ सकते हैं. यही कारण है कि समाजवादी पार्टी, बसपा, कांग्रेस और बीजेपी सभी दल ब्राह्मण सम्मेलनों, प्रबुद्ध वर्ग संवादों और धार्मिक प्रतीकों के जरिए इस वर्ग को साधने में जुटे हैं. प्रदेश भर में परशुराम की मूर्तियों और मंदिरों का उद्घाटन इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है।

'घुसखोर पंडत' विवाद सिर्फ वेब सीरीज की बात नहीं

ऐसे माहौल में 'घुसखोर पंडत' विवाद सिर्फ एक फिल्म का मसला नहीं रह जाता, बल्कि यह सीधे राजनीतिक संदेश से जुड़ जाता है. सरकार का यह कदम ब्राह्मण समुदाय को यह भरोसा दिलाने के तौर पर देखा जा रहा है कि उनकी भावनाओं से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. खास बात यह है कि बसपा प्रमुख मायावती ने भी एफआईआर को सही कदम बताते हुए ऐसी फिल्मों पर प्रतिबंध की मांग की, जिससे यह साफ हुआ कि विपक्ष भी इस मुद्दे पर सत्तारूढ़ दल के खिलाफ जाने से बच रहा है. यह दुर्लभ राजनीतिक सहमति इस बात का संकेत है कि ब्राह्मण वोट बैंक की अहमियत को लेकर सभी दल सजग हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने अडानी पोर्ट्स को दी गई चरागाह भूमि वापस लेने संबंधी हाईकोर्ट का आदेश रद्द किया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में गुजरात हाईकोर्ट के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें राज्य के मुंद्रा में अडानी पोर्ट्स को आवंटित 108 हेक्टेयर गौचर (चरागाह) भूमि को वापस लेने का निर्देश दिया गया था. बार एंड बेंच की रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस जेके माहेश्वरी और जस्टिस अतुल चंदुरकर की पीठ ने कहा कि चरागाह भूमि को वापस लेने का निर्णय और उस पर आधारित हाईकोर्ट के निर्देश, प्रभावित आवंटी को सुनवाई का अवसर दिए बिना पारित किए गए थे, जिससे पूरी प्रक्रिया टिकाऊ नहीं रह जाती. अदालत ने कहा, 'इस दृष्टि से हम हाईकोर्ट के आदेश को रद्द करने के इच्छुक हैं.' और यह भी नोट किया कि हाईकोर्ट के निर्देश सीधे तौर पर राज्य सरकार के 4 जुलाई 2024 के पुनः-अधिग्रहण (रिज़म्पशन) आदेश से जुड़े थे, जो गांव की चरागाह भूमि से संबंधित था. कोर्ट ने अधिकारियों को इस मामले में नए सिरे से निर्णय लेने का निर्देश दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि यदि अडानी पोर्ट्स ने कोई आपत्ति दाखिल की है तो राज्य प्राधिकरण उसे दो सप्ताह के भीतर विचार करें. साथ ही यह अनिवार्य किया कि नया फैसला लेने से पहले सभी संबंधित पक्षों को सुनवाई का उचित अवसर दिया जाए. कोर्ट ने आगे आदेश दिया कि 10 जुलाई 2024 को पहले दिए गए निर्देश के अनुसार यथास्थिति (स्टेटस-क्वो) तब तक बनी रहेगी, जब तक राज्य सरकार पुनर्विचार की प्रक्रिया पूरी नहीं कर लेती. अदालत ने स्पष्ट किया कि राज्य प्राधिकरणों द्वारा नया आदेश पारित किए जाने के बाद गुजरात हाईकोर्ट इस आवंटन से जुड़ी लंबित जनहित याचिका पर स्वतंत्र रूप से आगे की कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र होगा. यह विवाद वर्ष 2005 से जुड़ा है, जब नवीनल गांव में गौचर (चरागाह) के रूप में वर्गीकृत लगभग 231 हेक्टेयर भूमि मुंद्रा पोर्ट्स को आवंटित की गई थी, जिसे बाद में अडानी ने अधिग्रहित कर लिया. 2010-11 में जब उस भूमि पर बाड़ लगाने का काम शुरू हुआ, तो नवीनल गांव के निवासियों ने गुजरात हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की और कहा कि गांव की चरागाह भूमि का आवंटन पशुपालन पर निर्भर ग्रामीणों के हितों को नुकसान पहुंचाता है।

सितंबर 2014 में हाईकोर्ट ने इस याचिका का निपटारा यह कहते हुए कर दिया था कि राज्य सरकार चराई के लिए वैकल्पिक सरकारी भूमि उपलब्ध कराएगी. लेकिन जब वैकल्पिक चरागाह भूमि का प्रस्तावित आवंटन का काम पूरा नहीं हुआ, तो राज्य सरकार ने 2015 में पुनर्विचार (रिकॉल) आवेदन दाखिल किया और कहा कि माप-जोख के बाद वह वादा की गई गौचर भूमि देने में असमर्थ है. इसके बाद जनहित याचिका फिर से बहाल कर दी गई. 19 अप्रैल 2024 को गुजरात हाईकोर्ट ने वरिष्ठ राजस्व अधिकारियों को चरागाह भूमि की कमी की इस लंबे समय से चली आ रही समस्या का समाधान खोजने का निर्देश दिया. इसके बाद राज्य प्राधिकरणों ने अडानी पोर्ट्स को पहले दी गई 108 हेक्टेयर (लगभग 266 एकड़) चरागाह भूमि वापस लेने का फैसला किया गया. इस संबंध में 4 जुलाई 2024 को पुनः-अधिग्रहण का आदेश जारी किया गया और 5 जुलाई 2024 को हाईकोर्ट ने इस निर्णय का संज्ञान लेते हुए चरागाह भूमि की वापसी के लिए आगे की कार्रवाई के निर्देश दिए. अडानी पोर्ट्स ने इन निर्देशों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी और दलील दी कि चरागाह भूमि की वापसी और हाईकोर्ट के आदेश उसे सुनवाई का अवसर दिए बिना जारी किए गए थे. सुप्रीम कोर्ट ने 10 जुलाई 2024 को हाईकोर्ट के आदेश पर अंतरिम रोक लगा दी थी. गुरुवार को अदालत ने हाईकोर्ट के आदेश को रद्द कर दिया और मामले को राज्य सरकार द्वारा नए सिरे से तय करने का निर्देश दिया।

संक्षिप्त ख़बरें

नमाजियों के खून से लाल हुई मस्जिद! जुमे की नमाज के दौरान हुआ सुसाइड बम ब्लास्ट, 31 लोगों की मौत और 169 घायल; चारों ओर मचा कोहराम...

पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद एक बार फिर आतंकी हिंसा से दहल उठी। शुक्रवार को जुमे की नमाज़ के दौरान शहजाद टाउन इलाके स्थित तरलाई इमामबाड़ा में हुए आत्मघाती धमाके में कम से कम 31 लोगों की मौत हो गई, जबकि 169 से अधिक लोग घायल हो गए। धमाके के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और सुरक्षा एजेंसियों ने पूरे क्षेत्र को घेर लिया।

पुलिस के अनुसार, आत्मघाती हमलावर को इमामबाड़ा के मुख्य गेट पर सुरक्षा कर्मियों ने रोकने की कोशिश की थी, इसी दौरान उसने खुद को विस्फोट से उड़ा लिया। धमाका इतना ज़ोरदार था कि आसपास के इलाकों में भी उसकी आवाज़ सुनी गई। प्रारंभिक जानकारी में 15 मौतों की पुष्टि की गई थी, लेकिन बाद में मृतकों की संख्या बढ़कर 31 हो गई।

पुलिस सूत्रों का कहना है कि हमलावर एक विदेशी नागरिक था और उसके संबंध प्रतिबंधित आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (TTP) से जुड़े फितना अल-ख्वारजी नेटवर्क से बताए जा रहे हैं। हालांकि, अब तक किसी भी आतंकी संगठन ने इस हमले की ज़िम्मेदारी नहीं ली है।

धमाके के तुरंत बाद पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचे और राहत एवं बचाव अभियान शुरू किया गया। हालात की गंभीरता को देखते हुए इस्लामाबाद के सभी प्रमुख अस्पतालों में इमरजेंसी घोषित कर दी गई, ताकि घायलों को तत्काल इलाज मिल सके। गौरतलब है कि यह हमला ऐसे समय में हुआ है जब राजधानी में सुरक्षा पहले से ही हाई अलर्ट पर थी। इससे पहले तीन महीने से भी कम समय पहले इस्लामाबाद के जिला एवं सत्र न्यायालय परिसर के बाहर हुए आत्मघाती हमले में 12 लोगों की जान चली गई थी।

फिलहाल सुरक्षा एजेंसियां हमले की जांच में जुटी हैं और इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि हमले से जुड़े सभी पहलुओं की गहन जांच की जा रही है और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

दिल्ली जनकपुरी हादसे में पहली गिरफ्तारी, बाइक सवार की मौत पर सब कॉन्ट्रैक्टर अरेस्ट, कौन है राजेश प्रजापति?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दिल्ली के जनकपुरी हादसे पर बड़ एक्शन हुआ है. दिल्ली जल बोर्ड के गड्ढे में बाइक सवार कमल की मौत केस में पहली गिरफ्तारी हुई है. सूत्रों की मानें तो सब कॉन्ट्रैक्टर राजेश प्रजापति को दिल्ली पुलिस ने अरेस्ट कर लिया है. सुबह से ही उससे पूछताछ हो रही थी. सूत्रों के मुताबिक कई और बड़ी गिरफ्तारियां भी होने वाली हैं कॉन्ट्रैक्टर्स, इंजीनियर और साइट मैनेजर पर गाज गिर सकती है. शुक्रवार को बाइक सवार कमल की गड्ढे में गिरकर मौत हो गई थी. यह घटना रात 11 से 12 बजे के बीच की थी. इससे पहले पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी में एक गड्ढे में गिरने से कथित तौर पर बाइक सवार की मौत के मामले में सरकार ने बड़ एक्शन लिया. दिल्ली सरकार ने इस मामले में जल बोर्ड के तीन अधिकारियों को सस्पेंड किया. दिल्ली पुलिस इस मामले में कई बड़ी गिरफ्तारियां करने वाली है. सब कांट्रेक्टर राजेश प्रजापति के रूप में पहली गिरफ्तारी है. पुलिस ने मुताबिक, जब जब हादसा हुआ तो वहां पर एक परिवार निकल रहा था. परिवार ने कमल को गड्ढे में गिरते हुए देखा था. परिवार ने यह जानकारी तुरंत वहां मौजूद सिक्योरिटी गार्ड और गड्ढे के बगल में टेंट में रह रहे एक शख्स को दी थी. टेंट में रहने वाले वाला भी सब कॉन्ट्रैक्टर राजेश प्रजापति का कर्मचारी था. कर्मचारी ने तुरंत इसकी जानकारी सब कांट्रेक्टर राजेश को दी. राजेश रात में मौके पर पहुंचा. ,उसने गड्ढे में बाइक भी देखी और कमल को पड़े हुए देखा. लेकिन उसने पुलिस को जानकारी देने की बजाय घर चला गया. यही कारण है कि उसकी गिरफ्तारी हुई है।

घटना क्या थी?

कमल ध्यानी रात में बाइक पर घर लौट रहे थे. जनकपुरी के एक इलाके में दिल्ली जल बोर्ड ने सीवर लाइन की खुदाई की थी. खुदाई के बाद गड्ढा पूरी तरह खुला छोड़ दिया गया. कोई बैरिकेड, कोई रिफ्लेक्टर टेप, कोई चेतावनी बोर्ड, कोई लाइट...कुछ भी नहीं था. अंधेरे में कमल का बाइक गड्ढे में गिर गए. इसमें ही कमल की मौत हो गई।

कौन हैं राजेश प्रजापति?

राजेश प्रजापति दिल्ली जल बोर्ड के सीवर प्रोजेक्ट के सब-कॉन्ट्रैक्टर है. खुदाई का काम और उसकी सुरक्षा उसकी जिम्मेदारी थी. लेकिन उसने सबसे बुनियादी सेफ्टी नियमों का भी पालन नहीं किया. गड्ढा बिना ढके छोड़ दिया, कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं की. पुलिस का कहना है कि राजेश की मौके पर मौजूदगी और घटना को छुपाने का प्रयास उनके खिलाफ सबसे बड़ सबूत है

पुलिस की कार्रवाई

दिल्ली पुलिस ने पहले ही एफआईआर दर्ज कर ली है. अब मामला सिर्फ दुर्घटना नहीं, बल्कि आपराधिक लापरवाही का बन गया है. पुलिस सूत्रों ने बताया कि प्रत्यक्षदर्शियों के बयान, कर्मचारी की कॉल रिकॉर्डिंग और राजेश की मौजूदगी के सबूत है. अगले कुछ दिनों में कॉन्ट्रैक्टिंग कंपनी, साइट इंजीनियर और अन्य लोगों की भी गिरफ्तारी हो सकती है।

RSS किसी के खिलाफ नहीं, हमारा काम पूरे देश के लिए है... मुंबई में बोले संघ प्रमुख मोहन भागवत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मुंबई में राष्ट्रीय स्वय सेवक के संघ यात्रा के 100 वर्ष-नए क्षितिज कार्यक्रम में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि आरएसएस किसी के खिलाफ नहीं है. हम अपना काम बिना किसी का विरोध किए करते हैं. इस दौरान उन्होंने कांग्रेस की स्थापना का भी जिक्र किया. संघ प्रमुख ने कहा, अंग्रेजों ने कांग्रेस की स्थापना सुरक्षा वाल्व के रूप में की थी. भारतीयों ने इसे स्वतंत्रता संग्राम के एक शक्तिशाली साधन में बदल दिया. आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा, संघ का काम अनोखा है और हमारी जानकारी के आधार पर हम कहते थे कि ऐसा काम दुनिया में कहीं और नहीं होता. अब हम इसे सीधे अनुभव कर रहे हैं क्योंकि भारत और विदेश से लोग संघ को देखने आते हैं. पांचों महाद्वीपों से लोग आते हैं, इसकी गतिविधियों का अध्ययन करते हैं और कई सवाल पूछते हैं. उन्होंने कहा, आखिर में हर कोई एक ही सवाल पूछता है, चाहे वो अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया या मध्य पूर्व से हों, वो कहते हैं कि यह तरीका युवा पीढ़ी के लिए प्रासंगिक है और यहां तक कि उनके अपने देश के इतिहास में भी शायद गौतम बुद्ध के बाद ऐसा अखिल भारतीय प्रयास नहीं हुआ है।

बहुत से लोग संघ की तुलना दूसरे संगठनों से करते हैं

संघ प्रमुख ने कहा, बहुत से लोग संघ की तुलना दूसरी चल रही गतिविधियों, संस्थानों, संगठनों या पार्टियों से करने की कोशिश करते हैं. जब वे संघ को सतही तौर पर और दूर से देखते हैं तो गलतफहमियां पैदा होती हैं. लोग हमारे कार्यक्रम देखते हैं. लोग हमारी मार्च और गतिविधियां भी देखते हैं लेकिन संघ कोई अर्धसैनिक संगठन नहीं है. संघ के स्वयंसेवक लाठी चलाना सीखते हैं लेकिन संघ कोई देशव्यापी कुश्ती का अखाड़ा नहीं है।

संघ का काम खुद के लिए नहीं बल्कि पूरे देश के लिए है

उन्होंने कहा, संघ में भारतीय परंपरा के आधार पर संगीत की धुनें बजाई जाती हैं और व्यक्तिगत गीत भी गाए जाते हैं. मोहन भागवत ने ऋस्-व्याख्यानमाला में कहा, एक बार फिर सौ साल बाद हम आपको बता रहे हैं कि संघ क्या है? संघ का काम खुद के लिए नहीं बल्कि पूरे देश के लिए है।

संघ का गठन किसी के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं हुआ था

संघ प्रमुख ने कहा, संघ का गठन किसी दूसरे संगठन के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं हुआ था, न ही इसे किसी खास स्थिति की प्रतिक्रिया के रूप में बनाया गया था और इसने किसी के विरोध में काम नहीं किया है. उन्होंने कहा कि हमारा काम किसी का विरोध किए बिना किया जाता है. संघ लोकप्रियता या सत्ता नहीं चाहता।

हरदा ब्लास्ट के 2 सालः ना शव मिला, ना मुआवजा! धारा सिंह का परिवार आज भी इंतजार में

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हरदा- मगरधा रोड पर आज भी एक जगह ऐसी है, जहां सन्नाटा चीखता है. जहां कभी पटाखा फैक्ट्री चलती थी, वहां अब सिर्फ मलबे का ढेर है. टूटी दीवारें, उजड़े घर और जली जमीन हर दिन उस हादसे की याद दिलाते हैं, जिसने पूरे शहर को हिला दिया था. 6 फरवरी 2024 को हुए इस ब्लास्ट में 13 लोगों की मौत हुई थी, 300 से ज्यादा लोग घायल हुए थे और एक मजदूर धारा सिंह आज भी लापता है. न उसका शव मिला, न उसे मृत घोषित किया गया. दो साल बाद भी उसका परिवार उसी सवाल के साथ जी रहा है, क्या धारा सिंह जिंदा है या मलबे में कहीं दब गया. यह हादसा सिर्फ एक फैक्ट्री ब्लास्ट नहीं था, बल्कि सैकड़ों परिवारों की जिंदगी का विस्फोट था. जिनमें से कई आज भी जख्मों के साथ संघर्ष कर रहे हैं. 64 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे, 237 आंशिक रूप से घायल हैं. कई ऐसे हैं, जो जीवन भर के लिए दिव्यांग हो गए. फैक्ट्री के आसपास रहने वाले 40 परिवारों के मकान तबाह हो गए थे. दो साल बीतने के बाद भी 7 पीड़ित परिवार राहत शिविर में रहने को मजबूर हैं. मुआवजे, इलाज और इंसाफ की फाइलें अब भी दफ्तरों में अटकी हैं।

क्या हुआ था उस दिन जिसने बदल कर रख दी जिंदगी

6 फरवरी 2024 की सुबह करीब 11 बजे हरदा के बैरागढ़ क्षेत्र में मगरधा रोड स्थित राजेश अग्रवाल की पटाखा फैक्ट्री में एक के बाद एक तीन जोरदार ब्लास्ट हुए. यह धमाके करीब 15 मिनट के अंतराल में हुए. ब्लास्ट की गूंज 10 किलोमीटर दूर तक सुनाई दी. पूरा शहर दहल उठा. फैक्ट्री में उस समय सैकड़ों मजदूर काम करते थे, हालांकि पास में शादी होने के कारण उस दिन मजदूरों की संख्या कुछ कम थी. फैक्ट्री में छोटे-बड़े सभी तरह के पटाखों का निर्माण होता था. जांच में सामने आया कि फैक्ट्री परिसर में क्षमता से ज्यादा बारूद रखा गया था. धमाकों के बाद फैक्ट्री में आग लग गई, जिसे घंटों चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद काबू में किया गया।

धारा सिंहः जो आज भी फाइलों में जिंदा है

इस हादसे में 13 मजदूरों की मौत हुई. लेकिन खरगोन जिले का निवासी धारा सिंह आज तक लापता है. वह पटाखा फैक्ट्री में मजदूरी करता था. हादसे के बाद उसका शव नहीं मिला. परिजन हरदा आए, अस्पतालों, थानों और मलबे में तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला।

न तो मृत घोषित किया गया और न ही मुआवजा मिला

एक साल बाद 5 फरवरी 2025 को धारा सिंह का नुक्ता किया गया, लेकिन उसे न तो मृत घोषित किया गया और न ही मुआवजा मिला. दो साल बाद भी उसका परिवार सरकारी कागजों में फंसा हुआ है।

मलबे के बीच जिंदगी काट रहे परिवार

जिस गली में कभी चहल-पहल रहती थी, वहां अब सन्नाटा है. जो मकान थे, वे खंडहर बन चुके हैं

फैक्ट्री के पास रहने वाले करीब 7 परिवार आज भी राहत शिविर में हैं. इन परिवारों के लिए शासन ने 1 लाख 20 हजार रुपये की राशि स्वीकृत की थी, लेकिन कई परिवारों को यह राशि अब तक नहीं मिली।

पैर गंवाया, बीमारी बढ़ी, मदद नाममात्र

पटाखा फैक्ट्री से आधा किलोमीटर दूर पौधों की नर्सरी चलाने वाले सुरेश सोनी बताते हैं कि ब्लास्ट में उनके बाएं पैर में गंभीर फ्रैक्चर हुआ. पैर में लोहे की रॉड डाली गई. अब तक 7 ऑपरेशन हो चुके हैं. भोपाल और इंदौर के चक्कर लगाए. इलाज में करीब 7 लाख रुपये खर्च हो चुके हैं. उनकी पत्नी कृष्णा की किडनी खराब है. सप्ताह में तीन दिन डायलिसिस होता है. शासन से सिर्फ 50 हजार रुपये की मदद मिली।

हाथ गया, रोजी भी गई

सुमत्रा बाई पटाखा फैक्ट्री में मजदूरी करती थीं. धमाके के वक्त भागते समय लोहे की रॉड उनके हाथ पर गिर गई. इलाज के दौरान हाथ काटना पड़ा। अब वह कोई काम नहीं कर सकतीं. इलाज में 5 लाख रुपये खर्च हुए. शासन से सिर्फ 50 हजार रुपये मिले. आज भी हाथ में दर्द और भविष्य की चिंता बनी रहती है।

दिव्यांग पिता को बचाने में बेटे की मौत, उस दिन उसका जन्मदिन था

इस हादसे में 10 साल के मासूम आशीष राजपूत की भी जान गई. उसके पिता संजय राजपूत दिव्यांग हैं. फैक्ट्री से 300 मीटर दूर उनकी पान की गुमटी थी. धमाके की आवाज सुन बेटा दौड़कर आया और व्हीलचेयर को धक्का देने लगा. तभी तीसरा ब्लास्ट हुआ. एक बड़ा पत्थर उछलकर बच्चे के सिर पर लगा. इलाज के दौरान 9 फरवरी को उसकी मौत हो गई. उसी दिन उसका जन्मदिन था. संजय राजपूत बताते हैं कि बेटे की यादों के कारण उन्होंने वह घर बेच दिया. अब कलेक्टर ऑफिस के पीछे रह रहे हैं. शासन ने 15 लाख रुपये का मुआवजा दिया।

मुख्य आरोपी जमानत पर बाहर

पटाखा फैक्ट्री का मालिक और मुख्य आरोपी राजेश अग्रवाल बीमारी के आधार पर जमानत पर बाहर है. वह खुलेआम घूम रहा है. पीड़ित परिवारों में इसे लेकर गहरा आक्रोश है।

प्रशासन का पक्ष

संयुक्त कलेक्टर सतीश राय के अनुसार नियमों के तहत सहायता दी गई है. प्रशासन अब तक कुल 5.34 करोड़ रुपये की सहायता बांट चुका है।

बरेली की मस्जिद पर चला बुलडोजर, हाईकोर्ट ने दिया था आदेश, SDM बोले- इस जमीन पर अवैध कब्जा था

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में एक बार फिर प्रशासन की सख्ती देखने को मिली है. भोजीपुरा थाना क्षेत्र के पिपरिया गांव में आज अवैध निर्माण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की गई. यहां बनी एक मस्जिद को बुलडोजर से ध्वस्त किया जा रहा है. यह पूरी कार्रवाई इलाहाबाद हाईकोर्ट के सख्त आदेश के बाद की गई है. प्रशासन के अनुसार, करीब 300 वर्गगज क्षेत्र में बनी यह मस्जिद लंबे समय से विवाद का विषय बनी हुई थी. मामले की सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने निर्माण को अवैध मानते हुए इसे हटाने का आदेश दिया था. कोर्ट के निर्देशों का पालन करते हुए जिला प्रशासन ने आज कार्रवाई शुरू की. आज प्रशासन की टीम बुलडोजर और अन्य जरूरी संसाधनों के साथ मौके पर पहुंच गई थी. किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए. पिपरिया गांव को पूरी तरह छावनी में तब्दील कर दिया गया. मौके पर कई थानों की पुलिस फोर्स तैनात है. वहीं, पीएसी के जवानों को भी सुरक्षा में लगाया गया. कार्रवाई के दौरान प्रशासनिक अधिकारी खुद मौके पर मौजूद है और पूरी प्रक्रिया की निगरानी करते रहे. ध्वस्तीकरण की कार्रवाई शांतिपूर्ण तरीके से की गई. इस दौरान किसी तरह के विरोध या हंगामे की सूचना नहीं मिली।

'सख्त कार्रवाई की जाएगी'

प्रशासन का कहना है कि यह कार्रवाई किसी विशेष वर्ग के खिलाफ नहीं है, बल्कि अवैध निर्माण के खिलाफ कानून के तहत की गई है. हाईकोर्ट के आदेशों का पालन करना प्रशासन की जिम्मेदारी है. फिलहाल इलाके में स्थिति पूरी तरह सामान्य है. पुलिस और प्रशासन हालात पर नजर बनाए हुए हैं. अधिकारियों ने साफ किया है कि भविष्य में भी अगर कहीं अवैध निर्माण पाया गया तो उसके खिलाफ इसी तरह सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मामले में क्या बोले एसडीएम?

एसडीएम सदर प्रमोद कुमार ने बताया कि जिस भूमि पर मस्जिद बनी थी, वह राजस्व अभिलेखों में 'बंजर' (श्रेणी 5) और सरकारी भूमि के रूप में दर्ज थी. गाटा संख्या 1474 वाली इस जमीन पर अवैध निर्माण किया गया था. इस मामले में कानूनी लड़ाई साल 2008 से चल रही थी. तहसीलदार कोर्ट ने पहले ही बेदखली के आदेश जारी कर दिए थे. पक्षकार इस मामले को लेकर सिविल कोर्ट भी गए थे, लेकिन वहां से भी उनका मुकदमा खारिज हो गया. अदालत से राहत न मिलने के बाद प्रशासन ने ध्वस्तीकरण की कार्रवाई शुरू की।

जुर्माना और कार्रवाई

उन्होंने बताया कि बेदखली की प्रक्रिया में जुर्माने का भी प्रावधान होता है, जिसे पक्षकारों ने पहले ही जमा कर दिया था. सिविल कोर्ट में मामला लंबित होने के कारण कार्रवाई रुकी हुई थी, जो अब आदेश आने के बाद पूरी की गई।

कब्र के नारे, मोदी के मारे: विरोधियों की छुट्टी

[नफरत के ज्वालामुखी पर विकास की बारिश]

[सदन में गरजती सच्चाई: मोदी ने नफरत की हवा निकाल दी]

5 फरवरी 2026 को राज्यसभा में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का जवाब दिया, तो सदन में अचानक एक गहरा सन्नाटा छा गया। शोर-शराबे के बीच उनके भाषण ने विपक्ष पर तीखा हमला किया। यह भाषण केवल जवाब नहीं था, यह इतिहास की आँख में आँख डालने जैसा था, छुपी नफरत का बेनकाब सामना। 'मोहब्बत की दुकान' के मोहक शब्दों के पीछे छुपा जहर और 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' की कड़वी चेतावनी सीधे लोकतंत्र पर वार कर रही थी। मोदी ने मुखौटे को चीरते हुए स्पष्ट संदेश दिया–शब्द, कर्म और नीयत कभी छिप नहीं सकते। विपक्ष की ताकत और आक्रोश उस क्षण थम गए, और सदन ने उनकी बातों को गंभीरता से सुना।

राजनीति में नारे अक्सर हथियार बन जाते हैं, पर कभी-कभी वे जहरीले बनकर लोकतंत्र की धमनियों में उतरते हैं। राहुल गांधी ने लगातार 'मोहब्बत की दुकान' का नारा दोहराया। मोदी ने सीधे सवाल उठाया–यह कैसी मोहब्बत है जो मौत और खतरों का संदेश देती है? यह व्यक्तिगत विरोध नहीं, यह संवैधानिक और राष्ट्रीय अपमान है। प्रधानमंत्री ने याद दिलाया कि पिछले पच्चीस वर्षों में कितनी गालियाँ झेली, फिर भी विकास की गति रुकी नहीं। 140 करोड़ भारतीयों का विश्वास ही सरकार की असली शक्ति है, न कि किसी परिवार का रिमोट। यह तीखा संदेश सदन में गूंज गया और विपक्ष की आक्रोशित मुद्रा पर सन्नाटा छा गया। कांग्रेस के लिए मानना कठिन था कि एक चायवाले का बेटा देश का प्रधानमंत्री बन गया। मोदी ने कहा–वे मान बैठे थे कि प्रधानमंत्री पद उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। जब जनता ने वह अधिकार छीन लिया, तो नफरत की आग भड़क उठी। 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' केवल नारा नहीं, यह उनके गहरे मन का सपना था। लोकतंत्र की बात करने वाले भी कभी-कभी मौत के नारे लगाते हैं। पीएम ने चेतावनी दी–इतिहास की कब्र उन्हीं के इंतजार में है। जनता सब देख रही है, समझ रही है। सदन में वॉकआउट हुआ, पर सच गूंजता रहा और हवा में लटक गया।

मोदी ने अपने कार्यकाल की उपलब्धियाँ गिनाईं–आर्टिकल 370 हटाया, पूर्वोत्तर से आतंकवाद मिटाया, पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक की, नक्सलवाद पर प्रहार किया। यही वजह थी कि नफरत और कब्र के नारे उठे। उन्होंने स्पष्ट कहा–कितने भी नारे लगाओ, मेरी कब्र नहीं खोदी जा सकती। माँ-बहनों का आशीर्वाद मेरी सबसे मज़बूत ढाल है। गरीबों को घर, शौचालय, बिजली, गैस और जल जीवन मिशन मिला। 25 करोड़ लोग गरीबी की जकड़न से मुक्त हुए। कांग्रेस ने परिवार के लिए देश को दांव पर लगाया, मैं जनता के लिए जीवन समर्पित कर रहा हूँ। फर्क इतना साफ था कि बहस का कोई स्थान नहीं बचा। प्रधानमंत्री ने भाषण में देश की आर्थिक उड़ान को भी बखूबी रेखांकित किया। स्वतंत्रता के समय छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से फिसलकर ग्यारहवें स्थान पर पहुंची भारत, आज फिर से तीसरे नंबर की ओर तेजी से बढ़ रहा है। 'फ्रेजाइल फाइव' से 'विकसित भारत' की राह पर, उच्च विकास दर और कम मुद्रास्फीति के साथ दुनिया भारत की ओर आकर्षित हो रही है। यूरोपीय संघ (27 देशों के साथ 'मदर ऑफ ऑल डील्स') और अमेरिका जैसे बड़े समझौते, भविष्य-तैयार व्यापार सौदे–ये सब वैश्विक विश्वास की निशानी हैं। मोदी ने कहा–ये उपलब्धियां विपक्ष की नजर में नहीं आतीं, इसलिए वे नफरत के नारे लगाते हैं। लेकिन 140 करोड़ भारतीयों का आशीर्वाद, गरीबों-युवाओं की ताकत ही असली ढाल है। कांग्रेस ने देश को लूटा, मैंने जनता को सशक्त बनाया। यह फर्क इतना स्पष्ट है कि कोई बहस बाकी नहीं बचती। सदन में उनकी बातें विकास की नई गूंज बन गई।

यह हमला केवल कांग्रेस पर नहीं, पूरे विपक्ष पर था। मोदी ने कहा–'मोहब्बत की दुकान' में आग लगी है, इसलिए कब्र के नारे उठते हैं। वे हार से जलते हैं। चुनाव हारने पर नफरत दोगुनी हो जाती है। जनता समझदार है, 140 करोड़ लोग मेरे साथ खड़े हैं। उनकी सरकार रिमोट से नहीं, जन-विश्वास से चलती है। मोदी ने मुस्कान के साथ कहा–रोज़ गालियाँ सुनता हूँ, पर स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। यह केवल हास्य नहीं था, यह अटूट आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प का परिचायक था। सदन में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। विपक्ष चुप था; बहस का कोई अवसर नहीं बचा।

पीएम ने स्पष्ट संदेश दिया–नफरत से कुछ नहीं बनता। अगर 'मोहब्बत की दुकान' कब्र खोदने वाली बन जाए, तो वह दुकान बंद होनी चाहिए। देश विकास, एकता और प्रगति चाहता है, न कि नफरत। जो लोग 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' कहते हैं, वे खुद समय की कब्र में समा जाएंगे। जनता ने अपना निर्णय सुना दिया है। यह भाषण विपक्ष पर तीखा हमला और सरकार की उपलब्धियों का बयान था। मोदी ने साबित कर दिया–शब्द भी क्रांति ला सकते हैं। सदन खाली हुआ, लेकिन उनकी गूँज हवा में गूँजती रही और लोकतंत्र की चेतना में अमिट छाप छोड़ गई।

हर शब्द में तीव्रता थी, हर वाक्य में दृढ़ प्रतिबद्धता। यह केवल राजनीतिक हमला नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को जगाने का साहसिक प्रयास था। विपक्ष के नारे और झूठ कभी छिप नहीं सकते। मोदी ने साबित किया कि जनता के विश्वास और कामकाज का सामना किसी नफरत से नहीं किया जा सकता। यह भाषण इतिहास में दर्ज होगा, क्योंकि इसमें केवल जवाब नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य का संदेश था। विकास और एकता की राह में नफरत की आग को बुझाने का प्रतीक बन गया। सदन से बाहर लोग सोच में डूबे थे, हर मन में सवाल उठ रहा था–क्या लोकतंत्र की सुरक्षा इतनी मजबूत है? मोदी ने साबित किया कि लोकतंत्र केवल संविधान में नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और नेताओं की जिम्मेदारी में जीवित रहता है। 'मोहब्बत की दुकान' और 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' जैसे नारे इतिहास में चेतावनी बनकर हमेशा गूंजेंगे। यह भाषण वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए संदेश बन गया–नफरत से कुछ नहीं बनता। देश विकास, एकता और प्रगति चाहता है। जो लोग प्रधानमंत्री की कब्र की कामना करते हैं, वे समय की कब्र में समा जाएँगे। जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। मोदी ने साबित किया कि शब्द भी परिवर्तन ला सकते हैं। सदन खाली हुआ, पर उनकी गूँज लोकतंत्र की चेतना में अमिट छाप छोड़ गई।

प्रो. आरके जैन

संपादकीय

बोफोर्स से ट्रेड डील तक का सफ़र और बदलते भारत में कांग्रेस की ठहरी हुई सोच

संसद के उच्च सदन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक घंटे अड़तीस मिनट का भाषण केवल एक राजनीतिक जवाब नहीं था, बल्कि वह पिछले सात दशकों की राजनीतिक संस्कृति और बीते ग्यारह वर्षों में बदले भारत के आत्मविश्वास का आईना था। विपक्ष के शोर, नारेबाजी और वॉकआउट के बीच दिया गया यह उद्बोधन इस सवाल को फिर से केंद्र में ले आया कि देश आज किस दिशा में खड़ा है और कौन-सी सोच उसे आगे बढ़ा रही है। प्रधानमंत्री का 'बोफोर्स डील से ट्रेड डील तक' का कथन दरअसल एक पूरे युगांतरण का प्रतीक है, जिसमें भारत ने घोटालों, नीतिगत जड़ता और वैश्विक अविश्वास के दौर से निकलकर आत्मनिर्भरता, वैश्विक साझेदारी और आर्थिक महत्वाकांक्षा की राह पकड़ी है।

कांग्रेस की राजनीति लंबे समय से सत्ता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती रही है। आज़ादी के बाद दशकों तक केंद्र और अनेक राज्यों में शासन करने के बावजूद कांग्रेस देश को वह निर्णायक नेतृत्व नहीं दे पाई, जिसकी ज़रूरत थी। बोफोर्स घोटाला केवल एक रक्षा सौदे का मामला नहीं था, बल्कि वह उस मानसिकता का प्रतीक था जिसमें सत्ता, परिवार और हितों की गठजोड़ ने राष्ट्रीय हितों को पीछे छोड़ दिया। उसी दौर में भारत वैश्विक मंच पर एक ऐसा देश था, जिससे समझौते करने में दुनिया हिचकती थी और जिसकी अर्थव्यवस्था सहायता और कर्ज़ पर टिकी मानी जाती थी।

प्रधानमंत्री मोदी ने राज्यसभा में ठीक ही कहा कि कांग्रेस, टीएमसी या डीएमके जैसी पार्टियां दशकों तक सत्ता में रहीं, फिर भी देश उन्हें किस उपलब्धि से याद करता है, यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। इसके उलट, बीते ग्यारह वर्षों में भारत की तस्वीर बदली है। आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ चुका है, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उसकी भूमिका मज़बूत हुई है और बड़े-बड़े देश भारत के साथ व्यापार समझौतों के लिए उत्सुक हैं। यूरोपीय यूनियन से लेकर अमेरिका तक के साथ हो रही ट्रेड डील्स इस बदले हुए भरोसे का प्रमाण हैं।

कांग्रेस की समस्या केवल नीतियों तक सीमित नहीं है, उसकी भाषा और संस्कार भी सवालों के घेरे में हैं। 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' जैसे नारे न केवल राजनीतिक असहमति की मर्यादा को तोड़ते हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों का भी अपमान करते हैं। प्रधानमंत्री ने सही पूछा कि यह कैसी 'मोहब्बत की दुकान' है, जिसमें किसी निर्वाचित प्रधानमंत्री की कब्र खोदने की बात की जाती है। यह भाषा बताती है कि कांग्रेस आज भी नकारात्मकता और व्यक्तिगत द्वेष की राजनीति में उलझी हुई है, जबकि देश सकारात्मक एजेंडे और भविष्य की बात करना चाहता है।

कांग्रेस के 'युवराज' द्वारा एक सिख सांसद को गद्दार कहने का उल्लेख भी इसी मानसिकता की ओर इशारा करता है। यह केवल एक व्यक्ति पर टिप्पणी नहीं, बल्कि पूरे सिख समुदाय और उनके गुरुओं का अपमान है। जिस पार्टी ने लंबे समय तक खुद को समावेशिता और सेक्युलरिज़्म का ठेकेदार बताया, वही आज पहचान की राजनीति और विभाजनकारी बयानबाज़ी में फंसी दिखती है। प्रधानमंत्री का यह कहना कि यह सिखों और गुरुओं का अपमान है, केवल राजनीतिक आरोप नहीं, बल्कि सामाजिक चेतावनी भी है।

विकसित भारत की कल्पना करने वाली सरकार और कांग्रेस की सोच में मूलभूत अंतर है। मोदी सरकार मानती है कि 140 करोड़ भारतीय समस्याएं नहीं, बल्कि संभावनाएं हैं। इसके विपरीत, नेहरू-इंदिरा काल की वह सोच थी जिसमें जनसंख्या को समस्या के रूप में देखा जाता था। यह दृष्टिकोण ही नीति निर्माण को दिशा देता है। जब नेतृत्व जनता पर भरोसा करता है, तो परिणाम जनभागीदारी, स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल क्रांति और बुनियादी ढांचे के तेज़ विकास के रूप में सामने आते हैं।

अनुच्छेद 370 का हटाया जाना भी इसी निर्णायक नेतृत्व का उदाहरण है। दशकों तक जिसे असंभव बताया गया, उसे राजनीतिक इच्छाशक्ति ने संभव कर दिखाया। यह केवल एक संवैधानिक कदम नहीं था, बल्कि यह संदेश था कि भारत अब साहसिक फैसलों से नहीं हिचकता। कांग्रेस इसे आज भी अपने पुराने चश्मे से देखती है, क्योंकि वह बदलाव की राजनीति को स्वीकार नहीं कर पाई है।

ट्रेड डील के संदर्भ में वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और विदेश मंत्री एस. जयशंकर के बयान इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत-अमेरिका संबंध एक नए दौर में प्रवेश कर रहे हैं। आयात शुल्क में कटौती, संयुक्त बयान और संभावित हस्ताक्षर केवल आर्थिक आंकड़े नहीं हैं, बल्कि यह उस भरोसे का संकेत हैं जो दुनिया आज भारत पर कर रही है। कभी जिस भारत को समझौतों की मेज़ पर जगह पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता था, आज वही भारत शर्तें तय करने की स्थिति में है।

कांग्रेस की विडंबना यह है कि वह इस बदलाव को स्वीकार करने के बजाय उसे नकारने में ऊर्जा खर्च कर रही है। प्रधानमंत्री की कुर्सी को अपनी जागीर मानने वाली मानसिकता आज भी उसे परेशान करती है। उसे यह सवाल कचोटता है कि एक साधारण पृष्ठभूमि से आया व्यक्ति देश का नेतृत्व कैसे कर सकता है। यही असहजता उसकी बयानबाज़ी में झलकती है, चाहे वह 'कब्र' जैसे शब्द हों या व्यक्तिगत आरोप।

आज का भारत भावनाओं से नहीं, तथ्यों और परिणामों से बात करता है। ग्यारह वर्षों में सड़कों, रेल, डिजिटल भुगतान, रक्षा उत्पादन, अंतरिक्ष और कूटनीति में जो बदलाव आए हैं, वे किसी प्रचार का नहीं, बल्कि नीतिगत निरंतरता और कर्मनिष्ठा का परिणाम हैं। प्रधानमंत्री मोदी का विकसित भारत की ओर भारत को ले जाने का लक्ष्य केवल सपना नहीं, बल्कि स्पष्ट रोडमैप पर आधारित है।

अंततः यह बहस केवल मोदी बनाम कांग्रेस की नहीं है, बल्कि पुरानी और नई सोच की है। एक ओर वह राजनीति है जो अतीत के घोटालों, परिवारवाद और नकारात्मक नारों से बाहर नहीं निकल पा रही, और दूसरी ओर वह नेतृत्व है जो आत्मविश्वास, सत्यनिष्ठा और परिश्रम के बल पर भारत को नई ऊंचाइयों तक ले जाना चाहता है। बोफोर्स से ट्रेड डील तक का यह सफ़र बताता है कि देश ने रास्ता चुन लिया है। अब सवाल यह है कि कांग्रेस कब अपने भीतर झांककर यह समझेगी कि भारत बदल चुका है, और राजनीति को भी बदलना होगा।

कांतिलाल मांडोत

तेल के इर्द-गिर्द घूमता वैश्विक जगत

तेल, राजनीति का नया उपकरण।

विश्व की राजनीति का पूरा का पूरा चक्र आज प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तेल और ऊर्जा संसाधनों के इर्द-गिर्द घूमता दिखाई दे रहा है। जहाँ किसी देश का लोकतंत्र, मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय नियम कानून केवल कागज में दिखाई देने लगे हैं। अमेरिका के चलते जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ कर रही है। तेल और ऊर्जा संसाधन अब वास्तविक प्रेरक शक्ति,भू-राजनीतिक हित तथा ऊर्जा सुरक्षा बन गई है।

अमेरिका द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सैन्य तथा कूटनीतिक हस्तक्षेप को जब तेल भंडारों, आपूर्ति मार्गों और रणनीतिक नियंत्रण के संदर्भ में जोड़ा जाता है तब यह स्पष्ट है कि ऊर्जा संसाधनों पर प्रभुत्व वैश्विक नेतृत्व का केंद्रीय उपकरण बन गया है, यही कारण है कि रूस से तेल खरीदने के प्रश्न पर भारत जैसे संप्रभु देश पर दबाव, प्रतिबंधों की धमकी और नैतिक उपदेशों की बौछार देखने को मिली, जबकि वही देश अपने हित में नियमों की व्याख्या बदलने से नहीं हिचकते; मध्य-पूर्व लंबे समय से इस राजनीति का केंद्र रहा है जहाँ तेल के साथ-साथ अब परमाणु ऊर्जा भी शक्ति संतुलन का निर्णायक कारण बन चुकी है। ईरान द्वारा परमाणु संधियों को लेकर अपनाया गया सतर्क या असहमति वाले रुख ने उसे वैश्विक दबावों के केंद्र बना दिया है और संभावित टकराव की आशंकाएँ इसी भय से उपज की परिणति हैं कि कहीं ऊर्जा और परमाणु क्षमता का संतुलन एकतरफा न हो जाए। यूरोप से एशिया तक बड़े देश तेल आयात-निर्यात, पाइपलाइन, समुद्री मार्गों और परमाणु ईंधन की आपूर्ति को लेकर जिस तरह से खेमे में लंम्बन्ध हो रहे हैं, उससे यह प्रतीत होता है कि वैश्वीकरण के युग में भी संसाधनों की राजनीति पहले से अधिक क्लिष्ट हो गई है। ऊर्जा आत्मनिर्भरता अब केवल आर्थिक लक्ष्य नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न बन चुकी है । यही कारण है कि विश्व की अधिकांश नीतियाँ नैतिकता से अधिक बैरल, रिएक्टर और आपूर्ति श्रृंखलाओं की भाषा में लिखी जा रही जहाँ युद्ध की आहट भी अक्सर शांति के नारों के बीच सुनाई देती है। वैश्विक राजनीति और व्यापार का आधुनिक ताना-बाना भारत, चीन, रूस, ईरान और खाड़ी देशों के ऊर्जा-केंद्रित संबंधों से और अधिक स्पष्ट हो जाता है, जहाँ तेल, गैस और परमाणु ईंधन केवल वस्तुएँ नहीं बल्कि रणनीतिक शक्ति के उपकरण बन चुके हैं। हालिया वर्षों के व्यापारिक रुझान बताते हैं कि भारत ने अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ाया, जिससे उसे अपेक्षाकृत सस्ती ऊर्जा मिली और घरेलू अर्थव्यवस्था को संबल मिला, जबकि यही कदम पश्चिमी देशों को असहज करता रहा, दूसरी ओर चीन ने रूस और ईरान दोनों के साथ दीर्घकालिक ऊर्जा और अवसंरचना समझौतों के माध्यम से अपने उद्योग और आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित किया है। जिससे वह वैश्विक विनिर्माण में अपनी बढ़त बनाए रख सके, रूस जो प्रतिबंधों के बीच नए बाज़ार तलाश रहा है, एशिया विशेषकर भारत और चीन को ऊर्जा निर्यात कर अपने व्यापार संतुलन को संभाल रहा है।

वहीं ईरान अपने तेल, गैस और परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को राष्ट्रीय संप्रभुता से जोड़कर और खाड़ी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग–दोनों के बीच संतुलन साधे हुए है। खाड़ी देश, जिनकी पूरी अर्थव्यवस्थाएँ ही तेल-गैस निर्यात पर टिकी हैं, अब व्यापार विविधीकरण, पेट्रोकेमिकल्स, हरित ऊर्जा और एशिया-केंद्रित बाज़ारों की ओर तेज़ी से बढ़ रहे हैं जहाँ भारत और चीन उनके सबसे बड़े ग्राहक बनते जा रहे हैं। इन नए व्यापारिक आंकड़ों और प्रवृत्तियों से यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक व्यवसाय अब केवल मुक्त बाज़ार का खेल नहीं रहा बल्कि ऊर्जा सुरक्षा, मुद्रा लेन-देन, समुद्री मार्गों और राजनीतिक गठबंधनों से गहराई से जुड़ चुका है, और इसी कारण विश्व की बड़ी शक्तियाँ व्यापार समझौतों को रणनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही हैं। जहाँ तेल और परमाणु ऊर्जा आने वाले दशकों की राजनीति और अर्थव्यवस्था दोनों की दिशा तय करते दिखाई दे रहे हैं।

संजीव ठाकुर

मोबाइल गेम्स का शिकार बनीं तीन मासूम जिंदगियां

गाजियाबाद जिले की एक बहुमंजिला आवासीय सोसायटी में घटित घटना ने पूरे समाज को भीतर तक हिला दिया। तीन नाबालिग बहनों का एक साथ जीवन समाप्त कर लेना केवल एक परिवार का निजी दुख नहीं हैए बल्कि यह उस दौर की भयावह तस्वीर है जिसमें तकनीकए अकेलापन और भावनात्मक दूरी बच्चों की दुनिया पर हावी होती जा रही है। यह घटना उस चुप्पी की गवाही हैए जो मोबाइल की चमक में दबती चली गई और अंततः तीन मासूम जिंदगियों को निगल गई। लोनी क्षेत्र की जिस सोसायटी में यह हादसा हुआए वहां सब कुछ सामान्य प्रतीत होता था। एक साधारण परिवारए माता.पिता अपने काम में व्यस्तए बच्चे पढ़ाई में लगे हुए। लेकिन भीतर ही भीतर एक ऐसी दुनिया पनप रही थीए जिसके बारे में किसी को ठीक से अंदाजा नहीं था। तीनों बहनें उम्र के उस पड़ाव पर थींए जहां भावनाएं बहुत तीव्र होती हैं और समझ अभी अधूरी। बड़ी बहन किशोरावस्था में प्रवेश कर चुकी थीए छोटी दोनों बहनें भी उसी रास्ते पर थीं। इसी उम्र में सहाराए संवाद और समझ की सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

रात के सन्नाटे में जब तीनों ने एक साथ ऊंचाई से छलांग लगाईए तब किसी ने नहीं सोचा था कि सुबह ऐसा दृश्य देखने को मिलेगा। पुलिस और अस्पताल की औपचारिकताओं के बीच जब उनके कमरे की तलाशी ली गईए तब कुछ पन्नों में दर्ज शब्दों ने सबको स्तब्ध कर दिया। एक छोटा सा पत्र और एक विस्तृत डायरीए जिसमें डरए अकेलापनए अपराधबोध और भावनात्मक टूटन साफदिखाई देती है। माता.पिता से क्षमा मांगते हुए लिखा गया वह संदेश किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को भीतर तक झकझोर देने के लिए पर्याप्त है।

डायरी के पन्नों में बार.बार एक ही भाव उभर कर आता है कि वे खुद को बेहद अकेला महसूस कर रही थीं। उन्हें ऐसा लगने लगा था कि उनसे उनकी दुनिया छीन ली गई है। वह दुनिया जो धीरे.धीरे उनके लिए वास्तविक जीवन से अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी। महामारी के दौरान जब स्कूल बंद हुएए खेल के मैदान सूने पड़े और मित्रों से मिलना बंद हो गयाए तब मोबाइल और परदे ने उनकी दुनिया पर कब्जा कर लिया। शुरुआत में यह केवल समय बिताने का साधन थाए लेकिन धीरे.धीरे वही उनका भावनात्मक सहारा बन गया। डायरी में विदेशी धारावाहिकोंए संगीत और कल्पनात्मक खेलों का उल्लेख मिलता है। इन माध्यमों में उन्होंने एक ऐसा संसार देखाए जहां रिश्ते सरल थेए भावनाएं साफथीं और हर दुख का समाधान किसी न किसी रूप में मौजूद था। धीरे.धीरे वे उसी दुनिया से जुड़ती चली गईं और वास्तविक जीवन उन्हें कठोरए बेरंग और अकेला लगने लगा। माता.पिता की डांटए पढ़ाई का दबाव और सीमाएं उन्हें उस काल्पनिक संसार से दूर ले जाने वाली बाधाएं प्रतीत होने लगीं।

जब परिवार ने यह महसूस किया कि बच्चों का अधिकांश समय मोबाइल में जा रहा है और पढ़ाई व स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा हैए तब स्वाभाविक रूप से उन्होंने रोक लगाने की कोशिश की। लेकिन यह रोक संवाद से नहींए बल्कि अचानक नियंत्रण के रूप में आई। बच्चों के लिए यह केवल एक उपकरण छीने जाने की बात नहीं थीए बल्कि उनके लिए वह सहाराए वह दुनिया और वह भावनात्मक जुड़ाव छिन जाने जैसा थाए जिसे वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रही थीं। यहां सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि मोबाइल या विदेशी संस्कृति अच्छी है या बुरी। सवाल यह है कि जब कोई बच्चा किसी चीज से इतना गहराई से जुड़ जाए कि उसके बिना जीवन अर्थहीन लगने लगेए तब क्या हम उसे समय रहते समझ पाते हैं। माता.पिता अपने अनुभव से बच्चों को मजबूत समझ लेते हैंए लेकिन बदलते समय में बच्चों की मानसिक दुनिया कहीं अधिक जटिल हो चुकी है। महामारी ने बच्चों से केवल स्कूल और खेल ही नहीं छीनेए बल्कि उनसे सामाजिक संवाद भी छीन लिया। लंबे समय तक घरों में बंद रहनाए डर का माहौल और अनिश्चित भविष्य ने कई बच्चों के भीतर चिंता और अवसाद को जन्म दिया। मोबाइल और परदा उनके लिए एकमात्र खिड़की बन गयाए जिससे वे बाहर की दुनिया देख सकते थे। लेकिन वही खिड़की धीरे.धीरे दीवार बन गई। इस घटना के बाद आसपास के लोगों ने बताया कि तीनों बहनें बहुत शांत स्वभाव की थीं। वे ज्यादा बाहर नहीं निकलती थीं और अक्सर कमरे में ही रहती थीं। यह चुप्पी ही सबसे बड़ा संकेत थीए जिसे समाज और परिवार दोनों ने सामान्य मान लिया। हम अक्सर बच्चों की चुप्पी को अनुशासन समझ लेते हैंए जबकि कई बार वह भीतर के तूफान की निशानी होती है। माता.पिता का दुख शब्दों से परे है। मां का यह कहना कि बच्चियां उनकी सहेलियां थींए बहनें नहींए इस बात को दर्शाता है कि रिश्ता प्रेम से भरा थाए लेकिन शायद संवाद की एक कड़ी कहीं कमजोर रह गई। पिता का यह स्वीकार करना कि उन्होंने बच्चों के भले के लिए सख्ती कीए लेकिन उनकी मानसिक स्थिति नहीं समझ पाएए आज के हर अभिभावक के लिए आत्ममंथन का विषय है।

यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारा समाज बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को उतनी गंभीरता से लेता हैए जितनी शारीरिक स्वास्थ्य को। हम बुखारए चोट और बीमारी पर तुरंत प्रतिक्रिया करते हैंए लेकिन अकेलापनए भय और अवसाद को अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। बच्चों की दुनिया बदल चुकी हैए लेकिन हमारी समझ अभी भी पुरानी है।

समाधान केवल प्रतिबंध लगाने में नहीं है। समाधान संवाद में हैए समय देने में है और बच्चों की दुनिया को समझने की कोशिश में है। अगर बच्चा किसी कल्पनात्मक संसार से जुड़ा हैए तो उसे तुरंत तोड़ने के बजाय यह समझना जरूरी है कि वह वहां क्यों सुकून महसूस कर रहा है। खेलए किताबेंए कलाए परिवार के साथ समय और खुले मन से बातचीत बच्चों को वास्तविक दुनिया से जोड़ने के मजबूत साधन हो सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि विद्यालयों और समाज में मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात हो। बच्चों को यह सिखाया जाए कि दुखए निराशा और अकेलापन असामान्य नहीं हैं और इनके लिए सहायता लेना कमजोरी नहीं है। माता.पिता को भी यह समझना होगा कि हर पीढ़ी की चुनौतियां अलग होती हैं और आज के बच्चे जिस दबाव में जी रहे हैंए उसे पुराने अनुभवों से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। गाजियाबाद की यह घटना एक चेतावनी है। यह हमें बता रही है कि अगर हम समय रहते नहीं जागेए तो तकनीक और भावनात्मक दूरी मिलकर और भी कई बचपन निगल सकती हैं। तीन बहनों का चला जाना एक ऐसा खालीपन छोड़ गया हैए जिसे कोई भर नहीं सकता। लेकिन अगर इस दुख से हम कुछ सीख सकें और आने वाले बच्चों को बेहतर समझएए बेहतर संवाद और बेहतर सहारा दे सकेंए तो शायद किसी और घर में ऐसी सुबह न आए। यह केवल शोक का समय नहीं हैए यह आत्ममंथन का समय है। बच्चों को बचाने की जिम्मेदारी केवल परिवार की नहींए पूरे समाज की है। अगर हम उन्हें सुनेंगेए समझेंगे और उनके साथ खड़े होंगेए तभी यह भरोसा जिंदा रह पाएगा कि भविष्य सुरक्षित है।

महेन्द्र तिवारी

कुर्सी कथनी और करनी के बीच का फर्क जब सत्ता गई तो नैतिकता की याद आई

राजस्थान विधानसभा में हालिया बहस केवल शब्दों की टकराहट नहीं थीए बल्कि वह उस राजनीतिक प्रवृत्ति का आईना थी। जिसमें सत्ता में रहते हुए विवेक मौन रहता है और सत्ता जाते ही उपदेशों की बाढ़ आ जाती है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के वक्तव्य इसी पृष्ठभूमि में सामने आएए जहां उन्होंने किसी एक व्यक्ति से अधिक उस मानसिकता पर प्रहार किया जो कुर्सी छिनते ही खुद को नैतिकता का ठेकेदार घोषित कर देती है। यह बहस हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या राजनीति में नैतिकता केवल रिटायरमेंट के बाद की योजना बनकर रह गई है।

कांग्रेस की राजनीति लंबे समय से कथनी और करनी के अंतर से जूझती रही है। सत्ता में रहते हुए जिन मुद्दों पर आंखें मूंद ली गईंए वही मुद्दे आज विपक्ष में बैठकर सबसे बड़े हथियार बना लिए गए हैं। मुख्यमंत्री का यह कहना कि श्ईमानदारी कोई रिटायरमेंट के बाद की योजना नहीं होतीश् केवल एक व्यंग्य नहींए बल्कि बीते वर्षों की राजनीतिक कार्यशैली पर सीधा सवाल है। जब परीक्षाओं के प्रश्न जेबों में उतर रहे थेए जब मेहनती युवा दर.दर भटक रहे थेए तब नैतिकता की किताबें कहां थींए यह सवाल आज भी अनुत्तरित है।

कांग्रेस शासन के दौरान पेपर लीक जैसे मामलों ने युवाओं के भविष्य पर गहरा आघात किया। प्रतियोगी परीक्षाएं भरोसे की जगह भय का कारण बन गईं। लेकिन उस समय न तो युवाओं की याद आई और न ही सिस्टम को सुधारने की इच्छाशक्ति दिखाई दी। आज वही लोगए जिनकी नाक के नीचे यह सब हुआए भ्रष्टाचार और युवाओं के भविष्य की दुहाई देते नजर आते हैं। यह दोहरा चरित्र ही वह कारण हैए जिस पर मुख्यमंत्री ने कटाक्ष किया कि पहले घी पी लिया और अब उपदेश दिए जा रहे हैं।

राजनीति में स्मृति बहुत चयनात्मक होती है। कांग्रेस नेताओं को आज युवाओं की पीड़ा याद आ रही हैए लेकिन सत्ता में रहते हुए वे सत्ता.संतुलनए रिश्तेदारों की सिफारिशों और राजनीतिक जोड़.तोड़ में व्यस्त थे। एक हाथ में हुकुम और दूसरे हाथ में सिफारिश का वह दौर आज भी लोगों को याद है। यही वजह है कि आज जब वे नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं तो वह खोखला प्रतीत होता है। जनता ने भी अब इस प्रवृत्ति को पहचान लिया है।

मुख्यमंत्री द्वारा खेजड़ी संरक्षण कानून की घोषणा इस बात का उदाहरण है कि वर्तमान सरकार केवल आरोप.प्रत्यारोप तक सीमित नहीं रहना चाहतीए बल्कि ठोस निर्णयों के साथ आगे बढ़ रही है। खेजड़ीए जो राजस्थान का कल्पवृक्ष हैए उसके संरक्षण के लिए कानून बनाना केवल पर्यावरणीय पहल नहींए बल्कि सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। यह उस शासन शैली को दर्शाता है जिसमें बातें कम और काम ज्यादा करने का प्रयास दिखता है। इसके विपरीतए कांग्रेस शासन में योजनाएं अक्सर घोषणाओं तक सिमट कर रह गईं।

जल जीवन मिशन हो या अन्य विकास योजनाएंए कांग्रेस सरकार पर कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार के आरोप केवल राजनीतिक बयानबाजी नहीं हैंए बल्कि उनके ही कार्यकाल के आंकड़े इसकी गवाही देते हैं। आठ.आठ महीनों तक मंत्री जेल में रहेए लेकिन जिम्मेदारी तय करने के बजाय सब कुछ परिस्थितियों पर डाल दिया गया। आज जब कार्रवाई हो रही है तो विपक्ष इसे प्रतिशोध की राजनीति बताने में जुटा है। सवाल यह है कि यदि सब कुछ इतना ही साफ था तो जांच से डर क्यों।

कांग्रेस की एक और बड़ी कमजोरी रही है उसका तात्कालिक राजनीति पर केंद्रित दृष्टिकोण। जाते.जाते जिले बनानाए प्रशासनिक ढांचे से ज्यादा चुनावी गणित को साधने का प्रयास था। विकास की दीर्घकालिक सोच के बजाय तात्कालिक लाभ की राजनीति ने प्रदेश को कई बार असंतुलन की स्थिति में ला खड़ा किया। यही कारण है कि आज भी कई क्षेत्रों में प्रशासनिक अव्यवस्था देखने को मिलती है।

विपक्ष की भूमिका लोकतंत्र में बेहद महत्वपूर्ण होती हैए लेकिन जब विपक्ष केवल शोर और कटाक्ष तक सीमित रह जाए तो उसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है। सदन में बार.बार टोकनाए नए विधायकों को बोलने का अवसर न देना और हर मुद्दे को राजनीतिक चश्मे से देखनाए यह सब उस राजनीतिक अपरिपक्वता को दर्शाता है जिससे कांग्रेस अब तक उबर नहीं पाई है।

मुख्यमंत्री का यह कहना कि उन्हें पक्ष या विपक्ष का कोई भी विधायक फोन करेए उसे जवाब मिलेगाए शासन की जवाबदेही की भावना को दर्शाता है। यह उस दौर से अलग है जब सत्ता के गलियारों तक पहुंच केवल चंद लोगों की बपौती हुआ करती थी। आज यदि कोई समस्या है तो उसका समाधान करने की बात की जा रही हैए न कि उसे फाइलों में दबाने की।

कांग्रेस को यदि वास्तव में आत्ममंथन करना है तो उसे पहले अपने अतीत की गलतियों को स्वीकार करना होगा। झूठ और आधे सच के सहारे राजनीति ज्यादा दिन नहीं चलती। जनता अब सवाल पूछती है और जवाब भी चाहती है। केवल भाषणों से भरोसा नहीं बनताए उसके लिए आचरण भी वैसा ही होना चाहिए। युवाओं को भाषण नहींए निष्पक्ष अवसर चाहिए और यह बात वही लोग बेहतर समझ सकते हैं जिन्होंने अपने भविष्य को अनिश्चितता में झुलसते देखा है।

राजस्थान की राजनीति आज एक ऐसे मोड़ पर है जहां शब्दों से ज्यादा कर्म की कसौटी है। कांग्रेस यदि केवल कटाक्ष और आरोपों तक सीमित रहेगी तो उसका राजनीतिक भविष्य और सिमटता जाएगा। समय की मांग है कि वह कम झूठ बोलेए कम दिखावा करे और आत्मावलोकन के साथ आगे बढ़े। क्योंकि राजनीति में जनता की स्मृति भले ही कभी.कभी धुंधली हो जाएए लेकिन अनुभव कभी झूठ नहीं बोलता।

कांतिलाल मांडोत

स्वामी– स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ला द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

विराम खंड-5 के मतदान बूथ 408 की समीक्षा बैठक

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में आज पूर्वाह्न विराम खंड-5 स्थित 5/ 371 पर नीरज सिंह ने मतदान बूथ संख्या 408 की समीक्षा बैठक पार्षद अरुण तिवारी, अध्यक्ष, जनकल्याण उपसमिति विराम खंड-5, डा. भरत राज सिंह, बूथ समिति के सदस्यों, बीएलओ श्रीमती सुलोचना तथा क्षेत्र के वरिष्ठ गणमान्य नागरिकों के साथ संपन्न की। इस अवसर पर नीरज सिंह ने लखनऊ में चल रहे विकास कार्यों एवं प्रस्तावित निवेश की विभिन्न परियोजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आग्रह किया कि बूथ स्तरीय समिति की सक्रियता सकारात्मक सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से निरंतर बढ़ती रहनी चाहिए। बीएलओ श्रीमती सुलोचना ने बूथ संख्या 408 के एसआईआर से संबंधित विश्लेषणात्मक रिपोर्ट नीरज सिंह के समक्ष प्रस्तुत की। विराम खंड-5 गोमती नगर जनकल्याण उपसमिति के अध्यक्ष डॉ. भरत राज सिंह ने भी एसआईआर विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उपस्थित सदस्यों को अवगत कराया। बैठक में सर्वश्री एस.एस. ओझा, दया शंकर तिवारी, शैलेन्द्र नाथ टण्डन, नर्बदा श्रीवास्तव, कुमकुम जैतली, शैलजा सिंह, चन्द्र शेखर सिंह, जी.एस. भल्ला, डॉ. राम प्रताप शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद, के.के. जायसवाल, विजय कुमार भुर्जी, विनय, अतुल जौहरी, प्रवीण खंडेलवाल, कर्नल संदीप श्रीवास्तव सहित अन्य नागरिक उपस्थित रहे। बैठक का संचालन श्री राकेश जैतली ने किया।

डॉ. जितेंद्र ने चौथी बार पास की नेट परीक्षा

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के साकेत नगर मोहल्ला निवासी डॉ. जितेंद्र कुमार निर्मल ने योग विषय से चौथी बार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) उत्तीर्ण कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उनकी इस उपलब्धि से परिवार, मित्रों और शुभचिंतकों में खुशी का माहौल है। डॉ. जितेंद्र बीएएमएस और एमडी हैं। वह कोतवाली के सामने अपना निजी क्लीनिक संचालित करते हैं। व्यस्त चिकित्सा सेवा के बावजूद उन्होंने पढ़ाई का रास्ता नहीं छोड़ा। नियमित अध्ययन ने उन्हें बार बार सफलता दिलाई। डॉ. जितेंद्र ने बताया कि योग उनके लिए केवल विषय नहीं, बल्कि जीवन का मार्ग है। कठिन परिश्रम और आत्मविश्वास से उन्होंने चार बार नेट परीक्षा पास की। वर्तमान में वह मध्य प्रदेश के उज्जैन स्थित महर्षि पाणिनि संस्कृत वैदिक विश्वविद्यालय से योग विषय में पीएचडी कर रहे हैं। उनकी इस सफलता पर डॉ. जेपी सिंह, डॉ. धर्मेंद्र सिंह, डॉ. सशेंद्र, कोतवाल शिवशंकर सिंह, पत्नी ज्योति भारती, अर्चना, साधना, उत्सवी सहित अनेक लोगों ने खुशी व्यक्त की।

किशोरी से दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली पुलिस ने किशोरी को बहला फुसलाकर अगवा करने और उसके साथ दुष्कर्म करने के मामले में वांछित आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि कोतवाली नगर थाना क्षेत्र के रेवती खुर्द सीताराम का पुरवा गांव निवासी नीरज कुमार लोधी ने क्षेत्र के एक गांव में अपनी बुआ के घर रह रही नाबालिग किशोरी को 31 जनवरी को बहला फुसलाकर भगा ले गया था। किशोरी के लापता होने पर उसकी बुआ की तहरीर पर पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज किया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट और दुष्कर्म से संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की। शुक्रवार को पुलिस टीम ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

आवारा सांड के हमले से किसान हुआ घायल खेत जाते समय किया हमला, पेट फटने से गंभीर हालत लखनऊ रेफर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर के कोतवाली देहात क्षेत्र के ग्राम गौरा में गुरुवार शाम खेत जा रहे एक बुजुर्ग किसान पर आवारा सांड ने अचानक हमला कर दिया। सांड के हमले में 54 वर्षीय किसान रामदीन गंभीर रूप से घायल हो गए। हमले की तीव्रता इतनी ज्यादा थी कि सांड के सींग लगने से किसान का पेट फट गया। जिससे मौके पर ही अफरा-तफरी मच गई घायल किसान को परिजन और ग्रामीण आनन-फानन में जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां हालत गंभीर देखते हुए चिकित्सकों ने उन्हें लखनऊ रेफर कर दिया जानकारी के अनुसार रामदीन गुरुवार शाम अपने घर से खेत की ओर जा रहे थे। इसी दौरान रास्ते में पड़ोस से गुजरते समय वहां मौजूद एक आवारा सांड ने अचानक उन पर हमला कर दिया। सांड ने रामदीन को पटक-पटक कर घायल कर दिया। चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़े और किसी तरह सांड को भगाकर किसान को बचाया ग्रामीणों का कहना है कि यही सांड पिछले कई दिनों से इलाके में आतंक का कारण बना हुआ था। तीन दिन पहले ग्रामीणों ने उसे पकड़कर एक पेड़ से बांध दिया था, लेकिन बाद में किसी कारणवश वह फिर से खुल गया। इसके बाद से सांड खुलेआम गांव और खेतों के आसपास घूम रहा था जिससे ग्रामीणों में भय का माहौल बना हुआ था। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली देहात पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जानकारी ली। ग्रामीणों ने प्रशासन से आवारा पशुओं की समस्या के स्थायी समाधान की मांग की है इधर जिला अस्पताल के डॉक्टरों के अनुसार रामदीन की हालत नाजुक बनी हुई है। उन्हें बेहतर इलाज के लिए लखनऊ रेफर कर दिया गया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से आवरा गौवंशो से निजात दिलाने की मांग की है!!

बोलेरो सवार युवकों ने दूल्हे के बड़े भाई को जमकर पीटा

मांगलिक कार्यक्रम में दहशत फैला दी बोलेरो सवार युवक

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के चकमनिया गांव में शादी समारोह के दौरान बोलेरो सवार युवकों ने अगवानी के दौरान दूल्हे के बड़े भाई के साथ मारपीट कर दी। घटना से बारातियों में दहशत फैल गई। पीड़ित युवक ने पुलिस को तहरीर दी है। हरचंदपुर थाना क्षेत्र के पडेरा गांव निवासी राहुल पुत्र बनवारी ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि वह बुधवार की रात बारात लेकर चकमानिया गांव पहुंचा था। अगवानी के दौरान एक युवक अपने सात आठ अज्ञात साथियों के साथ वहां आया और अचानक उसके साथ मारपीट करने लगा। विरोध करने पर आरोपी धमकाते हुए बोलेरो वाहन से मौके से फरार हो गए। पीड़ित ने एक युवक को नामजद करते हुए उसके साथियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। घटना के बाद विवाह समारोह में कुछ देर के लिए तनाव का माहौल बन गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले की अभी कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने पर मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

स्वास्थ्य व्यवस्था बेहतर बनाए जाने के संबंध में मुख्यमंत्री को संबोधित पांच सूत्री मांग पत्र तहसीलदार बिसवां को सौंपा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां सीतापुर। ठंड अपने अंतिम पड़ाव पर है, कुछ समय मे गर्मी की शुरुआत होगी गर्मी के दिनों मे आम आदमी के लिए स्वास्थ्य बड़ा मुद्दा तहसील क्षेत्र मे रहा है। स्वास्थ्य के मुद्दे को लेकर शुक्रवार को मुख्यमंत्री को सम्बोधित 5 सूत्रीय मांग पत्र नागरिक अधिकार संगठन की जिला संयोजक कमरुन निशा की अगुवाई मे उपजिलाधिकारी शिखा शुक्ला की गैरमौजूदगी मे तहसीलदार बिसवां उमाशंकर त्रिपाठी को सौपा गया। मांगपत्र मे कमरुन निशा ने कहा कस्बे का एकमात्र गया प्रसाद मेहरोत्रा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मे प्रतिदिन लगभग 600 से 700 मरीजों की ओपीड़ी मे चिकित्साधिकारियों के द्वारा मरीज देखे जाते है गर्मियों के दिनों मे यह संख्या और बढ़ेगी जिसके चलते भारी दबाव का स्वास्थ्य सेवाओं पर गहरा असर हो सकता है। उन्होने कहा केंद्र मे तीस बेड है, बेड़ो की संख्या 60 हो, गर्भवती महिलाओ को दी जा रही अल्ट्रासाउंड की सुविधा सभी महिलाओ एवं पुरुषों को सुलभ कराने व स्वास्थ्य केंद्र मे पैथालोजी लैब छोटे जगह मे होने मे संचालित होने पर स्वास्थ्य कर्मियों एवं मरीजों को दुशवारी का हवाला देते हुए होती है बड़ी जगह मे संचालन की व्यवस्था कराये जाने की बात कही गई है। वही प्रतिदिन आने वाले मरीजों की भीड़ को देखते हुए चिकित्साधिकारियों एवं स्टाप मे बढ़ोत्तरी एवं केंद्र परिसर के अंदर जर्जर भवन को नस्ट कर नये भवन का निर्माण कराये जाने की मांगे प्रमुख रूप से की गई है। इस मौके पर मदन गुप्ता,अधिवक्ता, कमरुन निशा, हरीशंकर गुप्ता,अख्तर अली,विश्राम लाल गौतम, दयाराम गौतम आदि मौजूद रहे।

सूचना विभाग के मिनिस्टीरियल कर्मचारी संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। सूचना विभाग के मिनिस्टीरियल कर्मचारी संघ के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह शुक्रवार, 06 फरवरी 2026 को सूचना निदेशालय के सभागार में गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर निदेशक सूचना श्री विशाल सिंह ने सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई तथा उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक सूचना विशाल सिंह ने कहा कि सूचना विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे प्रदेश सरकार की नीतियों, निर्णयों और जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में सेतु का कार्य करते हैं। उन्होंने पदाधिकारियों से अपेक्षा की कि वे ईमानदारी, निष्ठा और कर्तव्यपरायणता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें तथा विभाग की गरिमा बनाए रखें। उन्होंने कहा कि कर्मचारी संघ प्रशासन और कर्मचारियों के बीच समन्वय स्थापित करने में अहम भूमिका निभाता है। सकारात्मक संवाद और सहयोग से ही विभाग को नई ऊँचाइयों तक ले जाया जा सकता है। शपथ ग्रहण समारोह में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों में कपिल कुमार सिंह को अध्यक्ष, निखिल मिश्रा एवं शशांक शेखर शुक्ल को उपाध्यक्ष, राज कुमार को महामंत्री, बृज मोहन पाण्डेय को संयुक्त मंत्री, शुभम चौहान को संगठन मंत्री, शिव शंकर पाण्डेय को प्रचार मंत्री, मो. सलीम अंसारी को कोषाध्यक्ष, उमेश कुमार को ऑडिटर तथा आनन्जय, राजेश कुमार भारती, पंकज यादव, प्रवीन दुबे, राशि सक्सेना एवं पंकज पाल को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में चुना गया।इसके अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्यों की ओर से प्रमोद कुमार एवं शोभा चौधरी को सलाहकार सदस्य नामित किया गया।

चुनाव प्रक्रिया निर्वाचन अधिकारी अमित यादव एवं सह निर्वाचन अधिकारी अमित शुक्ला की देखरेख में शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष रूप से संपन्न कराई गई।इस अवसर पर अपर निदेशक सूचना अरविन्द कुमार मिश्र, वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी संजय कुमार सिंह, सहायक निदेशक सतीश चन्द्र भारती, जितेन्द्र प्रताप सिंह, चन्द्र विजय वर्मा, संजय कुमार सहित विभाग के अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने विभाग एवं कर्मचारियों के हित में कार्य करने, समस्याओं के समाधान हेतु निरंतर प्रयास करने तथा संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। समारोह का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एसपी ने दो थानाध्यक्षों को पद से हटाया लचर कार्यशैली पर कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर में पुलिस महकमे में एक बार फिर बड़ा फेरबदल किया गया है। एसपी अंकुर अग्रवाल ने देर शाम तीन इंस्पेक्टर और दो सब इंस्पेक्टरों के तबादले कर दिए। अचानक किए गए इन तबादलों से विभाग में हलचल मच गई है। खास तौर पर दो थानों के प्रभारी निरीक्षकों से चार्ज छिनने को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। एसपी द्वारा जारी आदेश के अनुसार सदरपुर और रामकोट थानों के प्रभारी निरीक्षकों को उनके पद से हटाते हुए अपराध शाखा भेज दिया गया है। सदरपुर थाने के प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार को अपराध शाखा में संबद्ध किया गया है। वहीं रामकोट थाने के प्रभारी निरीक्षक सुरेश कुमार पटेल से भी रामकोट थानाध्यक्ष की जिम्मेदारी छीन ली गई है और उन्हें भी अपराध शाखा भेज दिया गया है। इन बदलावों के तहत सदरपुर थाने की कमान अब इंस्पेक्टर मुकेश वर्मा को सौंपी गई है। वहीं रामकोट थाने के नए थानाध्यक्ष के रूप में सब इंस्पेक्टर पीयूष सिंह को तैनात किया गया है। पीयूष सिंह इससे पहले रामपुरकलां थाने में तैनात थे उनके स्थान पर रामपुरकलां थाने की जिम्मेदारी सब इंस्पेक्टर लल्ला गोस्वामी को सौंपी गई है जिन्हें नया थानाध्यक्ष बनाया गया है। सब इंस्पेक्टर लल्ला गोस्वामी अभी तक हरगांव कस्बा चौकी प्रभारी थे। बताया जा रहा है कि कानून-व्यवस्था को और मजबूत करने तथा थानों की कार्यप्रणाली में सुधार के उद्देश्य से यह तबादले किए गए हैं एसपी अंकुर अग्रवाल लगातार पुलिसिंग को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए सक्रिय नजर आ रहे हैं और बीते कुछ समय में कई स्तर पर प्रशासनिक बदलाव कर चुके हैं इन तबादलों के बाद संबंधित थानों में नई तैनाती के साथ कामकाज शुरू हो गया है। पुलिस महकमे में इसे नियमित प्रशासनिक प्रक्रिया बताया जा रहा है, हालांकि चार्ज छिनने को लेकर अंदरखाने कई तरह की चर्चाएं भी चल रही हैं!!

बोलेरो सवार युवकों ने दूल्हे के बड़े भाई को जमकर पीटा

मांगलिक कार्यक्रम में दहशत फैला दी बोलेरो सवार युवक

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के चकमनिया गांव में शादी समारोह के दौरान बोलेरो सवार युवकों ने अगवानी के दौरान दूल्हे के बड़े भाई के साथ मारपीट कर दी। घटना से बारातियों में दहशत फैल गई। पीड़ित युवक ने पुलिस को तहरीर दी है। हरचंदपुर थाना क्षेत्र के पडेरा गांव निवासी राहुल पुत्र बनवारी ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि वह बुधवार की रात बारात लेकर चकमानिया गांव पहुंचा था। अगवानी के दौरान एक युवक अपने सात आठ अज्ञात साथियों के साथ वहां आया और अचानक उसके साथ मारपीट करने लगा। विरोध करने पर आरोपी धमकाते हुए बोलेरो वाहन से मौके से फरार हो गए। पीड़ित ने एक युवक को नामजद करते हुए उसके साथियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। घटना के बाद विवाह समारोह में कुछ देर के लिए तनाव का माहौल बन गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले की अभी कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलने पर मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

खाकी को दागदार कर रहे सालों से हल्के में तैनात आरक्षी...खूबसूरती में कोतवाली

● गत 20 रोज में डलमऊ कोतवाली की पलटी काया ,बाउंड्री वॉल बनकर तैयार स्वच्छता पर विशेष ध्यान!

तस्कर ,चोर पर शिकंजा लेकिन हल्के में पैर पसारे आरक्षीयो का इकबाल न्याय से ज्यादा आय का जरिया!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रायबरेली। कोतवाली डलमऊ की काया पलट कर गई है। यह हम नहीं कह रहे बल्कि कोतवाली पर आने वाले फरियादी व आम नागरिक भी प्रभारी राघवन सिंह की इस पहल की सराहना कर रहा है राघवन सिंह को डलमऊ कोतवाली की कमान संभाले करीब एक महीना होने को है और डलमऊ कोतवाली की पुलिसिया पद्धति और खूबसूरती में निखार और व्यवस्थाओं में सुधार से आमजन व पुलिस कर्मियों को एक बेहतर संदेश देने का प्रयास किया जा रहा है प्रभारी राघवन सिंह के पदभार संभालने के बाद कोतवाली की चारदीवारी का सौंद्रीकरण और स्वच्छता प्रबंधन के पुख्ता इंतजाम के साथ साथ चोरी की घटनाओं का अनावरण व गांजा तस्करी में गिरफ्तारी तथा यातायात नियमों का शक्ति से पालन कराने हेतु मात्र 20 से 22 दिनों के अंदर 300 से ज्यादा चालान डलमऊ पुलिस के कार्य शैली और प्रभारी निरीक्षक की नेतृत्व क्षमता की सराहना होना लाजिम है किंतु दूसरी पृष्ठभूमि पर गौर फरमाया जाए तो डलमऊ कोतवाली के विभिन्न हल्का क्षेत्रों में सालों से तैनात आरक्षी इस समय चर्चाओं के दौर से गुजर रहे हैं इन सिपाहियों को क्षेत्र के लोग वसूलबाज सिपाही कहते हैं तो गैर कानूनी कार्य करने वाले लोग इन सिपाहियों को मस्त बता रहे हैं क्योंकि बरसों से एक ही हल्का क्षेत्र में तैनात इन सिपाहीयों की पहचान इतनी मुकम्मल सी है की हर कोई इनको अपना खासम खास बता रहा और इस बात का फायदा पैर जमाएं सिपाही पूरी सादगी से उठा रहे हैं मिट्टीखनन, हरे पेड़ों की कटाई बगैर जारी परमिट के कट जा रहे जिसके एवज में इन सिपाहियों के द्वारा रकम वसूली जाती है और इस बात की खबर कोतवाली में कानों कान किसी और को नहीं होती क्षेत्र में किसी भी प्रकार के वाद विवाद के निस्तारण से पहले जेबो का वजन बढ़ाने की कवायद इन सिपाहियों के द्वारा शुरू कर दी जाती है जिसमें वह सफल भी हो जाते हैं इस वजह से की पक्ष विपक्ष की पैरवी हेतु वही खासम खास बताने वाले लोग लग जाते हैं जो सिपाहियों का जेब का वजन तो बढ़ाते ही है और खुद भी मालामाल हो रहे कुल मिलाकर सिपाहियों के लिए एक ही हल्के में बरसों से तैनाती अब भाग्यशाली साबित हो रही सूत्र बताते हैं कि कोई भी प्रकरण अगर कोतवाली तक पहुंचा और बाद में पक्ष- विपक्ष के द्वारा आपसी सहमति पर सुलह नामा की स्थिति में भी सिपाहियों के द्वारा खाऊ कमाऊ नीत अपनाई जाती है देखने वाला विषय होगा फौरन कार्यवाही को अमल में लाने वाले वर्तमान प्रभारी की दृष्टि से ऐसे सिपाही कब तक ओझल रहते हैं क्योंकि उनके कार्य क्षेत्र में बदलाव की सख्त ज़रूरत है जो खाकी को दागदार कर रहे हैं हालांकि प्रभारी राघवन के कामकाज के तौर तरीका स्पष्ट करता है कि कर्तव्य निष्ठा से कार्य के साथ दैनिक जीवन में सकारात्मक सोच का होना जरूरी है सरकारी भवन व संपत्तियों की सार -संभाल के साथ उसका सौन्दर्य और समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश भी देना है।

तीसरी शादी करते समय दूसरी पत्नी ने पति को दबोचा पहली पत्नी से तलाक़, दूसरी पत्नी ने दहेज़ विवाद का चल रहा मुकदमा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर के महोली थाना क्षेत्र में दहेज उत्पीड़न और वैवाहिक धोखाधड़ी का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जहां पहली पत्नी से तलाक और दूसरी पत्नी से जुड़े दहेज उत्पीड़न का मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन होने के बावजूद एक युवक तीसरी शादी रचाने पहुंच गया। ऐन वक्त पर दूसरी पत्नी की सूचना पर पुलिस ने पत्नी के साथ गेस्ट हाउस में छापा मारकर आरोपी पति को रंगे हाथों दबोच लिया। महोली के रहने वाले विपिन की पहली शादी हरदोई की रहने वाली नीतू से हुई थी। दूसरी शादी मछरेहटा थाना क्षेत्र के हीरापुर गंज निवासी अनुपम से हुई थी। लेकिन कुछ समय बाद दोनों का तलाक हो गया। पीड़िता अनुपम का आरोप है कि शादी के कुछ ही दिनों बाद ससुराल पक्ष ने चार लाख रुपये अतिरिक्त दहेज की मांग शुरू कर दी और उसे मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाने लगा परिजनों के मुताबिक विवाह में खर्च के बावजूद बेटी को ससुराल में सम्मान नहीं मिला हालात इतने खराब हो गए कि विवाह के महज दस दिन बाद ही पीड़िता को मायके लौटना पड़ा वर्ष 2021 से दहेज उत्पीड़न और उत्पीड़न से जुड़ा मामला न्यायालय में लंबित है। इसी बीच 5 फरवरी को पीड़िता को सूचना मिली कि उसका पति महोली थाना क्षेत्र स्थित संस्कार गेस्ट हाउस में तीसरी शादी करने की तैयारी कर रहा है सूचना मिलते ही पीड़िता ने महोली थाने में पहुंचकर संयुक्त टीम ने तत्काल गेस्ट हाउस में छापा मारा, जहां आरोपी शादी की रस्मों में व्यस्त मिला पुलिस ने मौके से ही उसे हिरासत में लेकर मछरेहटा थाने पहुंचा दिया। पीड़िता ने आरोप लगाया कि यदि वह समय पर न पहुंचती तो आरोपी तीसरी शादी कर लेता उसने कहा कि न्यायालय में मामला लंबित होने के बावजूद पति द्वारा कानून की खुलेआम अनदेखी की जा रही है पुलिस का कहना है कि अभी तक इस मामले में कोई तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलते ही कार्रवाई की जाएगी!!

पुलिस ने चाइनीज मांझे के खिलाफ़ की छापेमारी दो दुकानों से भारी मात्रा में मांझा बरामद, एक दुकानदार हिरासत में

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर में प्रतिबंधित चाइनीज मांझे के खिलाफ पुलिस ने सख्त रुख अपनाते हुए बड़ी कार्रवाई की है। कोतवाली नगर पुलिस ने शुक्रवार को क्षेत्र के कजियारे इलाके में छापेमारी कर भारी मात्रा में प्लास्टिक युक्त चाइनीज मांझा बरामद किया। अचानक हुई इस कार्रवाई से इलाके के दुकानदारों में हड़कंप मच गया और कई दुकानदार अपनी दुकानें बंद कर मौके से फरार हो गए। यह छापेमारी क्षेत्राधिकारी नगर विनायक गोपाल भोसले के नेतृत्व में की गई। पुलिस टीम ने पतंग और मांझा बेचने वाली दुकानों की गहन तलाशी ली, जिसमें प्रतिबंधित चाइनीज मांझे का बड़ा जखीरा बरामद हुआ कार्रवाई के दौरान एक दुकानदार को हिरासत में लिया गया है, जिससे पुलिस पूछताछ कर रही है कि यह मांझा कहां से लाया गया था और किन-किन स्थानों पर इसकी सप्लाई की जा रही थी पुलिस अधिकारियों ने बताया कि चाइनीज मांझा पूरी तरह प्रतिबंधित है, क्योंकि इससे आए दिन गंभीर हादसे हो रहे हैं। यह मांझा बेहद धारदार होता है, जिससे राहगीरों, दोपहिया वाहन चालकों, बच्चों और पक्षियों को गंभीर चोटें आ चुकी हैं। इसी को देखते हुए जिले में इसके खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। छापेमारी के दौरान सदर बाजार चौकी इंचार्ज स्वाति चतुर्वेदी और बस स्टॉप चौकी प्रभारी प्रिंस सोनकर सहित पर्याप्त पुलिस बल मौके पर मौजूद रहा पुलिस ने दुकानों की जांच के साथ-साथ दुकानदारों को सख्त चेतावनी भी दी कि यदि भविष्य में प्रतिबंधित मांझा बेचते हुए पाए गए तो उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी सीओ सिटी विनायक गोपाल भोसले ने बताया चाइनीज मांझा बेचने, रखने और इस्तेमाल करने पर सख्त प्रतिबंध है। जिलेभर में लगातार अभियान चलाकर ऐसे लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी उन्होंने आम जनता से भी अपील की कि वे पतंग उड़ाने में सुरक्षित सूती धागे या प्लास्टिक रील ही प्रयोग करें और कहीं भी चाइनीज मांझा बिकता दिखे तो इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें!!

किसान की झोपड़ी में आग लगने से सामान जलकर राख

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के बेहटा कला गांव में बृहस्पतिवार की देर रात एक किसान की झोपड़ी में आग लग गई। आग से झोपड़ी में रखा करीब 80 हजार रुपये कीमत का सामान जलकर नष्ट हो गया। अग्निकांड में पीड़ित किसान को भारी नुकसान हुआ है। गांव निवासी रजनू गौड़ पुत्र मतई ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि गांव से दूर स्थित एक तालाब के किनारे वह मछली पालन के लिए झोपड़ी बनाकर रहता था। उसी झोपड़ी में मछली पकड़ने का जाल, भूसा, रजाई, गद्दे, अनाज और चारपाई रखी थी। शाम वह गांव में एक निमंत्रण में शामिल होने चला गया। रात करीब 11 बजे जब वह वापस लौटा तो उसकी झोपड़ी में आग लगी हुई थी। देखते ही देखते पूरा सामान जलकर राख हो गया। पीड़ित के मुताबिक झोपड़ी में रखा 60 हजार रुपये का मछली पकड़ने का जाल भी आग की चपेट में आ गया। घटना में उसका 80 हजार का नुकसान हो गया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जानकारी मिली है। जांच कराई जा रही है।

नरकंकाल का होगा डीएनए टेस्ट 15 दिन से लापता था युवक, भाई ने की शिनाख्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। के मिश्रिख कोतवाली क्षेत्र के फुलरूआ गांव में 15 दिन से लापता युवक का खेत में नर कंकाल मिलने के मामले में अब पुलिस डीएनए जांच के जरिए आधिकारिक पहचान कराने की तैयारी में जुट गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि डीएनए सैंपल की जांच से मौत से जुड़े कई अहम राज सामने आ सकते हैं। परिजनों द्वारा किसी भी तरह के आरोप से इंकार किए जाने के बाद यह मामला और रहस्यमय हो गया है। गौरतलब है कि बीते दो दिन पूर्व बुधवार को ग्रामीणों ने खेत में कंकालनुमा शव पड़ा होने की सूचना पुलिस को दी थी। सूचना मिलते ही मिश्रिख कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल की घेराबंदी कर जांच शुरू की शव पूरी तरह कंकाल में तब्दील हो चुका था, जिससे पहचान कर पाना मुश्किल हो रहा था। हालांकि घटनास्थल से कुछ दूरी पर पड़े कपड़ों के आधार पर परिजनों ने मृतक की पहचान 32 वर्षीय श्याम किशोर उर्फ श्यामू कौशल पुत्र कौशल किशोर, निवासी फुलरूआ गांव के रूप में की थी। मृतक की पहचान उसके भाई पंकज ने की थी। परिजनों ने बताया कि श्याम किशोर 17 जनवरी को घर से निकला था, लेकिन इसके बाद वापस नहीं लौटा हैरानी की बात यह रही कि इस दौरान परिजनों ने थाने में उसकी गुमशुदगी दर्ज नहीं कराई थी शव मिलने के बाद भी परिजनों ने किसी प्रकार की आशंका या आरोप लगाने से साफ इंकार कर दिया, जिससे पुलिस की जांच और गहरी हो गई है रहस्य से पर्दा उठाने के लिए पुलिस ने फोरेंसिक टीम की मदद से घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। टीम द्वारा आसपास के खेतों में भी मानव अवशेष, कपड़े या अन्य सुरागों की तलाश की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि युवक की मौत किन परिस्थितियों में हुई। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक प्रदीप सिंह ने बताया कि डीएनए जांच से बहुत कुछ स्पष्ट हो जाएगा उन्होंने कहा कि परिजनों द्वारा आरोप न लगाए जाने के बावजूद मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है डीएनए जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी!!

संक्षिप्त खबरें

लोनी में खुले नाले बने मौत का जाल, कई मौतों के बाद भी नहीं ढके नाले; निवासी चिंतित

लोनी। शहर की गलियों और मुख्य सड़कों पर खुले नाले मौत का जाल बन गए हैं। इन खुले नालों में गिरने से अक्सर जानवर घायल हो जाते हैं, और कई बार लोग भी इनमें गिरकर घायल हो चुके हैं या उनकी मौत भी हो चुकी है। इसके बावजूद, जिम्मेदार विभागों ने अभी तक कोई सबक नहीं सीखा है। शहर के कई इलाकों में नाले बिना ढक्कन के खुले पड़े हैं, जिससे कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है। नगर पालिका को इस स्थिति की जानकारी है, लेकिन उसने अभी तक इस मामले में कोई प्रस्ताव तैयार नहीं किया है। नसंबंदी कॉलोनी, बलराम नगर, राजीव गार्डन, ऋषि मार्केट, नवीन कुंज, सरल कुंज, लक्ष्मी गार्डन और अमित विहार सहित कई मोहल्लों में, साथ ही मुख्य सड़कों पर भी नाले खुले पड़े हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि ये नाले गहरे हैं और बारिश के मौसम में इनमें तेज़ बहाव होता है। स्थानीय निवासियों ने बताया कि उन्होंने नगर पालिका अधिकारियों से नालों को ढकने के लिए बार-बार अनुरोध किया है, लेकिन हर बार उन्हें सिर्फ़ आश्वासन ही मिला है। लोगों का कहना है कि वे घर पर अपने छोटे बच्चों को लेकर लगातार चिंतित रहते हैं। सड़कों के किनारे बने इन नालों के किनारों पर सुरक्षा के लिए पर्याप्त बाड़ नहीं लगी है। रात में, खराब स्ट्रीटलाइट्स के कारण, पैदल चलने वाले लोग नालों की गहराई का अंदाजा नहीं लगा पाते हैं, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा काफी बढ़ जाता है।

साहिबाबाद में तेज डीजे बजाने पर पुलिस की कार्रवाई, दो गिरफ्तार

साहिबाबाद। टीला मोड़ थाना इलाके में डीजे सिस्टम पर तेज़ म्यूज़िक बजाने के आरोप में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि सार्वजनिक जगह पर डीजे बजाया जा रहा था, जिससे बच्चों और बुजुर्गों को परेशानी हो रही थी। लोगों ने मौके पर मौजूद पुलिस अधिकारियों से इसकी शिकायत की। ACP शालीमार गार्डन अतुल कुमार ने बताया कि 5 फरवरी की रात सब-इंस्पेक्टर राजकुमार शर्मा गश्त पर थे। जब वह बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ चौक पर पहुंचे, तो एक मालवाहक गाड़ी पर डीजे सिस्टम ज़ोर से बज रहा था। उनके पहुंचने पर लोगों ने उनसे शिकायत की।

उन्होंने डीजे ऑपरेटर से आवाज़ कम करने को कहा, जिस पर उन्होंने आवाज़ कम कर दी, लेकिन उनके जाने के बाद फिर से डीजे ज़ोर से बजाया जाने लगा। लोगों ने फिर से पुलिस से शिकायत की। इस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दिल्ली के करावल नगर के रहने वाले जुगल किशोर और पश्चिमी दिल्ली के रहने वाले रंजीत को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने डीजे सिस्टम भी ज़ब्त कर लिया है। दोनों के खिलाफ ध्वनि प्रदूषण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है।

55 साल की महिला से रेप की कोशिश में नाकाम रहा तो गला घोंटकर मार डाला, जालौन में आरोपी गिरफ्तार

जालौन। मंगलवार की रात कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में महिला की हत्या कर दी गई और शव सरसों के खेत में नग्न अवस्था में मिला। भतीजे की शिकायत पर पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज किया और जांच शुरु कर दी। गांव के ही 30 वर्षीय युवक ने शराब के नशे में घुसकर दुष्कर्म का प्रयास किया। जब महिला ने विरोध किया तो उसके कपड़े खींच दिए। महिला चिल्लाती हुई घर के बाहर भागी तो आंगन में गिर पड़ी। इसी दौरान आरोपित ने उसकी गला दबाकर हत्या कर दी।

अगले दिन पुलिस व फोरेंसिक टीम ने जांच की तो मिट्टी गीली होने के कारण उस पर कुछ जूतों के निशान मिले। पुलिस ने जांच आगे बढ़ाई तो आरोपित के घर के बाहर भी उसी खेत की गीली मिट्टी लगी मिली। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर कड़ाई से पूछताछ की तो आरोपित ने बताया दुष्कर्म में नाकाम होने पर उसने हत्या की है। पुलिस ने आरोपित को न्यायालय में पेश करने क बाद जेल भेज दिया है। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में 55 वर्षीय महिला का घर के बाहर खेत में शव मिला था। घर के आंगन में खून व चूड़ियां पड़ी थीं जबकि बिस्तर पर भी खून पड़ा था। मृतका मटर की फली तोड़ने का काम करती थी। बुधवार की सुबह जब महिला घर के बाहर नहीं निकली तो उसका भतीजा व ग्रामीण उसे देखने के लिए घर के अंदर गए थे। जहां पर खून देख उसकी खोजबीन की गई थी। सरसों के खेत में अर्धनग्न अवस्था में उसका शव पड़ा हुआ था। पुलिस अधीक्षक डा. दुर्गेश कुमार ने फोरेंसिक टीम भी मौके पर जांच की थी। मामले के राजफाश के लिए चार टीमें लगीं थीं और 48 घंटे में ही हत्या का राजफाश हो गया।

असम के नाथ-योगी समुदाय को राजनीतिक उपेक्षा के खिलाफ आवाज: आगामी चुनाव में प्रेस विज्ञप्ति के जरिए टिकट की मांग।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम धेमाजी–असम के सबसे प्राचीन मूल निवासियों में से एक, नाथ-योगी समुदाय, राजनीतिक रूप से सबसे उपेक्षित समूह बनकर उभरा है। भारत की स्वतंत्रता के पिछले 78 वर्षों में, असम विधानसभा के लिए इस समुदाय से अब तक केवल 7 विधायक ही चुने गए हैं। इनमें से 5 विधायक बराक घाटी से थे और केवल 2 ब्रह्मपुत्र घाटी से। ब्रह्मपुत्र घाटी के इन दो विधायकों में पहले 1956 में तत्कालीन गोलपाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित स्वर्गीय खगेंद्रनाथ नाथ थे और दूसरे 1972 में रहा विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित स्वर्गीय गुणेंद्र नाथ पंडित थे। असम प्रादेशिक योगी सम्मेलनी के अध्यक्ष धीरेंद्र नाथ ने राजनीतिक क्षेत्र में इस शून्यता को समुदाय के पिछड़ेपन का मुख्य कारण बताया है। आज समाचार पत्रों को जारी एक बयान में उन्होंने कहा कि असम की बराक और ब्रह्मपुत्र दोनों घाटियों में, सदिया से धुबरी तक और कोकराझार से करीमगंज तक, लगभग 45 लाख स्वदेशी नाथ-योगी समुदाय के लोग बिखरे हुए हैं। इसके अलावा नगांव, मरिगांव, दरंग, शोणितपुर, गोलपाड़ा, बोंगाईगांव और होजाई जैसे जिलों में हजारों नाथ-योगी युगों से रह रहे हैं। इन जिलों के साथ-साथ धुबरी, बिलासीपारा, कोकराझार, उदलगुरी, लखीमपुर, माजुली, धेमाजी, शिवसागर, जोरहाट और गोलाघाट सहित असम के लगभग हर जिले में यह समुदाय प्राचीन निवासी है। विशेष रूप से मरिगांव, बोरचला और सिपाझार जैसे महत्वपूर्ण विधानसभा क्षेत्रों में नाथ-योगियों के 40,000 से अधिक वोट हैं।अध्यक्ष ने आगे कहा कि नाथ-योगियों को अलग रखकर असम का इतिहास अधूरा है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर असम के विदेशी बहिष्कार आंदोलन तक, देश के लिए सैकड़ों नाथ-योगियों ने अपने रक्त का बलिदान दिया है। चर्यापद (प्रथम लिखित असमिया साहित्य) के रचयिता नाथ सिद्धों के समय से लेकर वर्तमान में असम की समृद्ध लोक संस्कृति और बेशकीमती पाट-मुगा रेशम उद्योग के संरक्षण और प्रचार में अग्रणी होने के बावजूद, आज यह समुदाय सबसे उपेक्षित है। उन्होंने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि छह साल के विदेशी बहिष्कार आंदोलन में 140 नाथ-योगी शहीद हुए, जिसके परिणामस्वरूप असम में क्षेत्रीयतावादी सरकार बनी, लेकिन एक भी नाथ-योगी विधायक नहीं बन सका। सनातन धर्म के अनुयायी होने के नाते, समुदाय के 95% से अधिक लोग वर्तमान भाजपा सरकार के कट्टर समर्थक हैं, फिर भी उस दल से एक भी नाथ-योगी को टिकट नहीं मिलता। उन्होंने सवाल उठाया कि सरकार में भागीदारी के बिना कोई समुदाय अपनी समस्याओं का समाधान कैसे कर सकता है? राजनीतिक दलों की इस निरंतर उपेक्षा ने समुदाय में आक्रोश पैदा किया है, जिससे लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति उनका विश्वास कम हो रहा है।

उम्मीदवारों की सूची और चेतावनी:

सम्मेलनी के अनुसार, आगामी विधानसभा चुनाव के लिए नाथ-योगी समुदाय के 14 से अधिक उम्मीदवारों ने भाजपा और कांग्रेस से टिकट के लिए आवेदन किया है। प्रमुख नाम इस प्रकार हैं: भाजपा (BJP) से दावेदार: श्री बेनुधर नाथ (कमलपुर), श्री उत्पल नाथ (मरिगांव), श्री मनोज सहरिया और श्री निपन नाथ (सिपाझार), श्री राकेश नाथ (बोरचला), श्री गुणराम नाथ (तिताबोर), श्री बिश्वजीत सहरिया और श्रीमती जोनमोनी देवी (टंगला), श्री रॉबिन नाथ (पलाशबाड़ी), श्री अंजन नाथ (हैलाकांडी), श्री किशोर नाथ (बरखला) और श्री आशीष नाथ (करीमगंज)। कांग्रेस (INC) से दावेदार: श्री बेनुधर नाथ (ढेकियाजुली और बोरचला), श्री करुणाकांत मेधी (सिपाझार)। अध्यक्ष धीरेंद्र नाथ ने दोनों प्रमुख दलों से इन उम्मीदवारों को टिकट देने की पुरजोर मांग की है। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी है कि '2026 की विधानसभा' नाथ-योगी विधायकों से शून्य नहीं रहनी चाहिए। यदि राजनीतिक दलों ने इस बार भी उन्हें नजरअंदाज किया, तो समुदाय आगामी चुनावों में कड़ा निर्णय लेने के लिए बाध्य होगा। प्रेस विज्ञप्ति के जरिए असम प्रदेश नाथ योगी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष धीरेन नाथ ने ऐलान किया।

न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सलेथू में इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों का हुआ भव्य विदाई समारोह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सलेथू में इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय संस्थापक प्रबंधक डॉज़ शशिकांत शर्मा ,प्रधानाचार्य एन एस पी एस त्रिपुला एसज़्एलज़्प्रजापति, प्रधानाचार्य सलेथू राजीव सिंह एवं उप -प्रधानाचार्या रजनी श्रीवास्तव के द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। सरस्वती मां की पूजा के पश्चात कक्षा-11 के छात्र- छात्राओं ने सभी गणमान्यों, शिक्षक - शिक्षिकाओं एवं कक्षा -12 के छात्र-छात्राओं को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर कक्षा -11 के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन कक्षा -11 के छात्र खुशी ,आस्था ,प्रज्ञा ,समीक्षा , प्रांजुल,नैमिष,सिद्धांत के द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में सर्वप्रथम कशिश,अर्पिता,अनन्या, अनुश्री ,काव्या के द्वारा सभी गणमान्यों व अन्य सभी का स्वागत गीत के माध्यम से उनका स्वागत व अभिनंदन किया। परिधि, श्वेता, प्रज्ञा, समीक्षा के द्वारा फ्रेंडशिप सॉन्ग व आस्था, खुशी, गौरी, अनुष्का, अदिति,पुष्पांजलि, कशिश, मोनिका, सक्षम, आयुष,आदर्श आदि के द्वारा ग्रुप डांस प्रस्तुत किया गया साथ ही यशस्वी, मानसी,रिया, अंशिका अनुष्का, युगवीर, आकिब, शशांक, पीयूष आर्यन पटेल आदि के द्वारा एक्ट प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की श्रृंखला में अंशिका, अंशिका वमा ,अनामिक ा,कशिश ,वैष्णवी ,जीनत के द्वारा फेयरवेल सॉन्ग व समीक्षा ,अनन्या ,सोनाक्षी ,एकता ,राज ,आदर्श ,शुभम ,आयुष आदि के द्वारा एक्ट प्रस्तुत किया गया।कक्षा -12 के विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ कक्षा-11 के विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को स्मृति चिन्ह व टाइटल भेंट कर विदाई दी गई। इसी क्रम में कुछ छात्र व छात्राओं को पूरे- वर्ष विभिन्न क्षेत्रों में विशेष प्रदर्शन के लिए प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया जिनमें - 'बेस्ट पर्सनैलिटी मेल' अक्षत वर्मा , 'बेस्ट पर्सनैलिटी फीमेल 'आयुषी पाण्डेय , 'स्टूडेंट- ऑफ द ईयर 'जाह्नवी मिश्रा' स्टार परफॉर्मर ऑफ कल्चरल एक्टिविटी अवार्ड 'समीक्षा त्रिपाठी, 'पेरेनियल स्टूडेंट अवार्ड' विकास , अभिनव ,उत्पल, स्वजल ,नीरज ,युगांत, समीक्ष ा,अर्शिया, आरोही ,रिया ,दिव्यांक, अनन्या , कोमल, श्रेया ,अल्पेंद ्र, कुनाल,अंकुर, देवांश,शशांक, अभिनव ,हर्षित, मो0कैफ ,आयुषी ,देवांग ,प्रिंस ,आंशिक ,अनामिका , अन्नू ,मधु,यशी, आकांक्षा, आलोक, शिवांश,प्रज्ञा, खुशबू,शालिनी, दिव्या, शुभी ,मुस्कान, यशी, पूजा ,अवंतिका , सना फातिमा ,मारिया ,राजन ,शुभ , आयुष ,ऋषिकेश ,धनराज ,सुमित , हिमांशु ,आयुष , शावेज़ ,आकाश ,अंशिका को दिया गया। तत्पश्चात कक्षा -12 के छात्रों द्वारा प्रबंधक को स्मृति- चिन्ह भेंट किया गया। इस मौके पर प्रबंधक डा0 शशिकांत शर्मा ने अपने संबोधन में बच्चों का उत्साहवर्धन एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि परिश्रम ही हमें सफलता की मंजिल तक पहुंचाता है इसलिए हमेशा परिश्रम करते रहना चाहिए, शिक्षा ही वह सफलता की कुंजी है जो हर खुशियों के द्वार को खोल देती है। आप जब आगे बढ़ते है तो बहुत से लोग आप को नकारात्मकता की ओर ले जाने का प्रयास करेंगे लेकिन आपको इन सभी चीजों से दूरी बनाते हुए आगे बढ़ना है, उम्मीद करता हूं कि आगे भी आप सभी ऐसी ही लगन और मेहनत से अपने सभी कार्य करते रहेंगे और आगे चलकर नई -नई ऊंचाइयों को स्पर्श करेंगे और साथ ही इस स्कूल का नाम भी रोशन करेंगे।आप सभी को हम सब की तरफ से आने वाले सुनहरे भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षक - शिक्षिकाएं व छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

बालू माफिया अमरेंद्र तिवारी व उनके सहयोगी ने किया मुकेश कुशवाहा के ऊपर जानलेवा हमला

● पुलिस की मिलीभगत से गांजे के झूठे आरोप में फसाने की थी फूल तैयारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जिले में बिगड़ते कानून व्यवस्था की खुल रही पोल । जिसमें खुद पुलिस ही अपराधी का कर रही सपोर्ट। प्राप्त जानकारी के अनुसार अमरेन्द्र तिवारी जो कि अवैध रेत का कारोबार काफी लंबे समय से कर रहा। जिसकी जानकारी पुलिस व फॉरेस्ट को थी। तीन चार दिन पहले ही अमरेन्द्र तिवारी की ट्रैक्टर को अवैध रेत से लदी गाड़ी को शहडोल डीएफओ ने पकड़ कर कार्यवाही किए। और उस कार्यवाही से बौखलाए अमरेंद्र तिवारी ने मुकेश कुशवाहा के ऊपर शक कर के उसके साथ मारपीट किया। जिसमें मारपीट का एक वीडियो भी वायरल हो रहा हैं। लेकिन खास बात तो यह हैं कि जो अपराधी मुझे मलतब मुकेश को पहले जान से मारना चाहा जब इतने में बात नहीं बनी तो कहि से गांजा लाया और मोटरसाइकिल की तरफ फेक कर मुझे फसाने के लिए खुद पुलिस को बुलाया और मेरे को थाने के अंदर करवा दिया । सूत्रों के हवालों से यह भी पता चल रहा कि अमरेंद्र तिवारी गांजे का भी लंबे समय से चिंटू गुप्ता से बेचने का कारोबार करवा रहा हैं। क्योंकि मुकेश कुशवाहा को गांजे के साथ पकड़वाने की पूरी कोशिश रहा। लेकिन कहते हैं न कि जब तक ऊपर वाला आप के साथ हैं तो कोई भी आपका कुछ नही कर सकता।

एफआईआर हुआ दर्ज

एफआईआर में मुकेश कुशवाहा ने मौखिक रिपोर्ट दर्ज करवाते हुए बताया कि मैं मुकेश कुशवाहा और अपने भाई भोला उर्फ दिनेश कुशवाहा पड़ोसी सोनू बैगन दोनों निवासी ग्राम सिंहपुर के साथ थाना में उपस्थित आकर मौखिक रिपोर्ट दर्ज करने आया कि 5/02/2026 सुबह 10:30 बजे करीबन मैं वह सोनू बैगा दोनों लोग लेबरों को बुलाने के लिए सोनू बैगा की मोटरसाइकिल में पड़मनिया करौंदिया टोला जा रहे था। करौंदिया टोला में प्राथमिक स्कूल के पहले गणेश गुप्ता की दुकान के पास पहुंचा तो वहां से सोनू बैगा अपने साथ दो लेबर पूरी बैगा और रमेशु बैगा को लेकर साइड ईटा भट्ठा पर चला गया। वहां पर पहले से अमरेंद्र तिवारी निवासी ग्राम सिंहपुर , विकास तिवारी उर्फ कक्का निवासी ग्राम सिंहपुर एवं दिलीप शर्मा निवासी ग्राम परमड़िया खुर्द के खड़े थे। जो अमरेंद्र तिवारी मुझे देखकर बोला कि इधर आप म****** तू मेरा रेत की गाड़ी फॉरेस्ट विभाग से पाड़वाया है। तो मैंने बोला कि मैं आपकी गाड़ी नहीं पकड़वाई इतने में कक्का उर्फ प्रकाश तिवारी तथा दिलीप शर्मा दोनों लोगों ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए और अमरेंद्र तिवारी मेरे साथ हाथ मुक्का से मारपीट करने लगा जिससे मेरे सिर में गंभीर चोट आई है और खून निकला। बाय तरफ कनपटी के पास काफी दर्द है। इतने में मेरा भाई दिनेश कुशवाहा वहां पहुंच गया और बीच बचाव कर मुझे छुड़ाया तब अमरेंद्र तिवारी अपने साथियों के साथ जाते-जाते बोला कि आज तू बच गया है किसी दिन तुझे मार कर खत्म कर दूंगा या तुझे एक दिन गांजे के केस में फंसा दूंगा घटना को करौंदिया टोला के लोग कालीचरण बैगा पिता करिया बैगा परसादी बैगा पिता सुखसेन बैगा व अन्य लोग देखें व सुने हैं। कुछ दिन पहले अमरेंद्र तिवारी के गाड़ी फॉरेस्ट विभाग द्वारा पकड़ी गई थी। जिस पर अमरेंद्र तिवारी मुझ पर संदेह करता है कि मैं उसकी गाड़ी मुखबरी कर पकड़वाई है। इसी रंजिस के कारण अमरेंद्र तिवारी मेरे साथ मारपीट और गांजे के झूठे केस में पकड़वाना चाहा। मामले को पुलिस ने गंभीरता लेते हुए मामला कायम कर विवेचना में लिया गया। जिस पर पुलिस के द्वारा मारपीट का मामला दर्ज करते हुए धारा 296/क्र 115/2 ,351/3 , 3/5 के तहत मामला दर्ज किया गया।

इनका कहना हैं

जब इस संबंध में बात किया गया तो उप पुलिस अधीक्षक शहडोल ने कहा कि मारपीट हुआ हैं थाना में मामला भी दर्ज हो गया और गांजे कहा से आया और किसने लाया इसकी जाँच की जा रही हैं। उप पुलिस अधीक्षक शहडोल

जिलाधिकारी की नियमित जनसुनवाई में दूरदराज से आये फरियादियों को मिल रहा त्वरित न्याय, सीधे लाइन पर लेकर समस्या का करातें हैं समाधान

● जिलाधिकारी ने शुरु की अभिनव पहल, जनजाति बाहुल्य ग्रामों में लोगों के जन्म प्रमाण पत्र जारी करने हेतु लगाये जायेंगे कै पजल जीवन मिशन अन्तर्गत रोड रेस्टोरेशन हेतु नगर पालिका, जल निगम और जल संस्थान की बनायी संयुक्त टीम

● किसान क्रेडिट कार्ड में अनावश्यक धनराशि को होल्ड करने वाले बैंकों पर होगी कार्यवाही विद्युत बिलों में सुधार व शत-प्रतिशत ब्याज माफी हेतु ''एकमुश्त समाधान योजना'' का लाभ लें उपभोक्ता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। सरकार की अंत्योदय की भावना को साकार रूप देते हुए जिलाधिकारी श्री सत्य प्रकाश नियमित अपने कार्यालय कक्ष में जनसुनवाई कर प्रभावी रूप से समस्याओं का निस्तारण करा रहे हैं और साथ ही जरूरतमंदों को सरकारी योजनाओं का भी लाभ दिला रहे है। इसी के क्रम में उन्होंने शुक्रवार को अपने कार्यालय कक्ष में जनसुनवाई के दौरान फरियादियों को सुना और पूरी संवेदनशीलता के साथ संबंधित अधिकारियों से दूरभाष पर निर्देशित कर समस्याओं का निस्तारण कराया। इसी दौरान जिलाधिकारी ने अभिनव शुरू पहल करते हुए जिले के जनजाति बाहुल्य ग्राम मादौन, कपासी, धौजरी, धौर्रा, पिपरई व भाटौन में ग्रामीणों के जन्म प्रमाण पत्र बनाये जाने हेतु आगामी बुधवार को कैंप आयोजित कराने के निर्देश दिये, उन्होंने कहा कि जन्म प्रमाण पत्र बन जाने से इन ग्रामीणों का आधार कार्ड भी बन सकेगा और सरकारी की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी मिल सकेगा। इसी प्रकार उन्होंने जल जीवन मिशन अन्तर्गत खोदी गई सड़कों की मर मत के लिए नगर पालिका, जल निगम और जल संस्थान के अधिकारियों को रोडवाइज सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये, ताकि विभागवार सड़कों का आवंटन कर त्वरित गति से उनकी मर मत करायी जा सके। इस दौरान महरौनी निवासी एक वृद्ध फरियादी ने उनका मकान गिर जाने के कारण आर्थिक सहायता की मांग की, जिस पर जिलाधिकारी ने तत्काल शिकायती पत्र को उपजिलाधिकारी महरौनी को पृष्ठांकित करते हुए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। शिकायतकर्ता मदनलाल द्वारा विद्युत बिल में सुधार न किये जाने की शिकायत की, जिस पर जिलाधिकारी ने दूरभाष पर अधीक्षण अभियन्ता विद्युत से वार्ता कर शिकायतकर्ता के बिल में संशोधन कराते हुए उसे एकमुश्त समाधान योजना का लाभ दिलाये जाने के निर्देश दिये। ग्राम दैलवारा निवासी किसान ने ग्रामीण बैंक दैलवारा में उसके जमा धन की निकासी पर बैंक द्वारा प्रतिबंध लगाने की शिकायत की, इस पर जिलाधिकारी ने एलडीएम का लाइन पर लेकर कहा कि आये दिन बैंकों की मनमानी की शिकायतें आ रहीं हैं, ऐसे बैंकों पर तत्काल कोई कार्यवाही करें, अन्यथा मैं स्वयं दोषियों पर कठोर कार्यवाही करुँगा। साथ ही पीढ़ित किसान का पैसा निकलवाने के भी निर्देश दिये। इसी प्रकार उन्होंने अन्य फरियादियों की समस्याओं का भी स बंधित अधिकारियों से वार्ता कर निस्तारण कराया। जिलाधिकारी ने कहा कि जनसुनवाई का उद्देश्य केवल शिकायत सुनना नहीं, बल्कि जनसमस्याओं का समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराकर जनता को राहत देना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जन सामान्य की शिकायतों के प्रति संवेदनशील रहते हुए प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण कराया जाए, ताकि शासन की योजनाओं का वास्तविक लाभ जनता तक पहुंच सके।

डीएम, एसपी ने आगामी त्यौहारों को शांतिपूर्ण स पन्न कराने के लिए आयोजकों व संभ्रांत नागरिकों के साथ की बैठक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। शुक्रवार को जिलाधिकारी सत्य प्रकाश व पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक ने आगामी माहों में पड़ने वाले विभिन्न त्यौहारों यथा दिनाँक 15 फरवरी को महाशिवरात्रि, 02 मार्च को होलिका दहन, 21 मार्च को ईद उल फितर आदि त्यौहार पर शाँन्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक की और त्यौहारों के दौरान कानून व्यवस्था सहित अन्य व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिये।बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद ललितपुर बहुत शान्तिप्रिय है, यहां के लोग आपसी सौहार्द के साथ त्यौहार मनाते आये हैं, आगामी त्यौहारों को भी आपसी सामन्जस्य के साथ मनायेंगे। उन्होंने उप जिलाधिकारियों व क्षेत्राधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वयं आयोजन स्थलों पर निरंतर निगरानी करेंगे, आयोजन समितियों के स पर्क में रहेंगे, उनके मोबाइल न बरों की सूची अपने पास रखेंगे। उन्होंने कहा कि त्यौहारों के दौरान कोई भी नई पर परा शुरू नहीं की जाएगी, पूर्व की भाँति निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार आयोजन किये जायेंगे। उन्होंने उप जिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी, ईओ, डीपीआरओ, विद्युत, जल निगम, जल संस्थान सहित अन्य अधिकारियों को निर्देशित किया कि टीम बनाकर आयोजन स्थलों का भ्रमण कर लें और व्यवस्थाएं दुरुस्त करा लें। उन्होंने कहा कि त्योहारों के दौरान जनपद में साफ-सफाई एवं निर्बाध रुप से पेयजल व विद्युत की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जाये। शिवरात्रि के अवसर पर शिव मंदिरों के आस-पास, मंदिरों पर जाने वाले रास्तों की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित की जाये, चूना आदि डलवाया जाये एवं सुरक्षा के लिए पुलिस व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। आवारा पशुओं के वितरण पर रोक लगायी जाये, इसके लिए पशुपालकों को नोटिस दिये जायें। जिलाधिकारी ने त्योहारों की श्रंखला के दौरान शहर की सभी स्ट्रीट लाइटों, सीसीटीवी कैमरों को ठीक कराया जाए, शहर के सभी आयोजन स्थलों पर साफ-सफाई, चूना, रंगोली आदि व्यवस्थाएं सुनिश्चित के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने आयोजक समितियों से अपील की कि आयोजन स्थलों पर वॉलेन्टियर तैनात करें, सोशल मीडिया पर भ्रामक खबरों से बचें। उन्होंने कहा कि आप सभी ने जो सुझाव समिति के समक्ष प्रस्तुत किये हैं,उन सभी पर अभी से कार्य शुरू कर दिया जाएगा। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि त्यौहार से पूर्व उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी आयोजन स्थलों का निरीक्षण कर कमियों को दूर करने का प्रयास करें, जिससे किसी प्रकार की अप्रिय घटना होने की संभावना न रहे। सभी आयोजक समितियां आयोजन स्थलों पर सीसीटीवी कैमरे अवश्य लगवायें, साथ ही वॉलेंटियर्स के माध्यम से वीडियोग्राफी भी करवायें। यदि कोई संदिग्ध दिखाई दे तो तत्काल जिला प्रशासन को उसकी सूचना दें। सभी क्षेत्राधिकारी सुनिश्चित करें कि जनपद में महिला संबंधी अपराध न होने पाये। जनपदवासी सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार की भ्रामक, छीटाकसी जैसी पोस्ट शेयर न करें, सोशल मीडिया सेल के द्वारा सभी सोशल साइटों पर कड़ी निगरानी की जा रही है। बैठक में आयोजन समितियों के पदाधिकारियों ने आयोजन स्थलों की सफाई, मार्गों के दुरुस्तीकरण, जर्जर तारों की मर मत, पेयजल की आपूर्ति, अग्निशमन वाहनों, ए बुलेंस सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की उपलब्धता हेतु अनुरोध किया, जिस पर जिला प्रशासन द्वारा व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने का आश्वासन दिया गया। कुछ गणमान्य नागरिकों ने नगर में कई सड़कों के क्षतिग्रस्त होने के कारण आवागमन बाधित होना बताया, जिस पर तत्काल जल निगम व लोक निर्माण विभाग के अभियंताओं बैठक में अपर जिलाधिकारी वि/रा अंकुर श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे राजेश कुमार श्रीवास्तव, उप जिलाधिकारी सदर मनीष कुमार, उप जिलाधिकारी मड़ावरा शैलेन्द्र चौधरी, समस्त क्षेत्राधिकारी एवं जल निगम, जल संस्थान, नगर पालिका, लोक निर्माण विभाग आदि विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

क्रिकेट मैच - झांसी ने बानपुर को हराया

●पाली में चल रहा है खेल महोत्सव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पाली । नगर पंचायत द्वारा आयोजित खेल महोत्सव में क्रिकेट मैच का पहला क्वार्टर फाइनल मुकाबला बानपुर और झांसी के बीच खेला गया। पूरे मुकाबले में दोनों ही टीमो के बीच काफी उतार- चढ़ाव देखने को मिला लेकिन अंततः टीम झांसी ने 07 रनों से जीत कर मुकाबला अपने नाम किया । मैदान पर टी-20 मुकाबले में झांसी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया । मैदान पर बल्लेबाजी करने आयी टीम झांसी की शुरुआत बेहद खराब रही । बानपुर के गेंदबाजों के सामने 18 रन पर अपने चार विकेट खो दिए । इसी बीच मैदान पर आए पांचवे विकेट के लिए संदीप और उदय ने महज 30 गेंदों में शानदार चौके , छक्के लगाकर 98 रन जोड़े । टीम झांसी 113 रन बनाकर आगे तेजी से बढ़ ही रही कि अचानक बानपुर के गेंदबाजों ने खेल ऐसी बापसी की लगातार पांच गेंदों पर झांसी के पांच विकेट गिरे दिए। आखिर में पूरी 17 ओवर में ऑलआउट होकर महज 117 रन ही बना सकी, जिसमें झांसी के पांच बल्लेबाज शून्य पर तो चार बल्लेबाज दहाई का अंक नहीं छू पाए । झांसी द्वारा मिले लक्ष्य को देख टीम बानपुर के जीत बड़ी आसान लग रही थी । दानिश और बॉबी ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 31 व 29 रनों का बड़ा योगदान दिया और टीम को मजबूत शुरुआत दी लेकिन बाद में आए बल्लेबाज झांसी के तेज गेंदबाजों के आगे संघर्ष करते नजर आए और आखरी ओवर में जहां टीम को एक विकेट शेष रहते 09 रनों की आवश्यकता थी लेकिन 02 रन ही बना सकी और पूरी टीम 09 विकेट खोकर 117 रनों के जबाब में 110 रन ही बना सकी । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे गुरुशरण सिंह , जतिन्द्र कौर, विक्रम जीत सिंह, पाली चेयरमैन मनीष तिवारी ने मेन ऑफ द मैच बने झांसी की खिलाड़ी संदीप प्रजापति बानपुर की ओर से हैट्रिक लगाने वाले सलमान को सम्मानित किया गया । इस दौरान सुरेश सेन, मुकेश राही, श्रीकांत विश्वकर्मा, तिलक यादव, सजंय, राजू, नरेंद्र, आशीष, मोनू राय आदि मौजूद रहे ।